●वर्ष : 16 ●अंक : 275 ●मूल्य : 02 रूपया मात्र पृष्ठ : 08 RNI No. DELHIN/2008/23928

दैनिक लोकतंत्र की शान

लोकतंत्र का स्तंभ

दिल्ली से प्रकाशित

मगंलवार 28 जनवरी 2025

Mfg & mkt by.. ANGEN PHARMACEUTICALS (OPC) PRIVATE LIMITED

Distributorship ke liye contact Karen .
(9315755133 / ya email Karen)
angenpharmaceuticals@gmail.com

समाचार

महाकुंभ में अमित शाह ने ऐसे लगाई डुबकी

प्रयागराज। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोमवार को प्रयागराज में गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों के संगम त्रिवेणी संगम में पवित्र डुबकी लगाई। शाह के साथ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और कई साधु-संत भी थे। उन्होंने मंत्रोच्चार के बीच अलग से डुबकी भी लगाई। महाकुंभ मेले के बीच, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह सोमवार को दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक आयोजनों में से एक में भाग लेने के लिए उत्तर प्रदेश के प्रयागराज पहुंचे। हवाई अड्डे पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ राज्य के कैबिनेट मंत्रियों ने उनका स्वागत किया। महाकुंभ मीडिया सेंटर की विज्ञप्ति के अनुसार, शाह बड़े हनुमान जी मंदिर और अभयवट भी जाएंगे।

राष्ट्रपति भवन के ऐट होम कार्यक्रम में दिखे दक्षिण भारत के रंग

नूना न्यूज एजेंसी।

नई दिल्ली। देशभर में 76वां गणतंत्र दिवस उत्साह के साथ मनाया गया. इस अवसर पर राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने विशिष्ट अतिथियों के लिए 'एट होम' रिसेप्शन का आयोजन किया जिसमें उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत कई गणमान्य मेहमान उपस्थित थे. इसके अलावा 'ड्रोन दीदी' तथा अन्य महिला अचीवर्स को भी विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था. 'एट होम' रिसेप्शन में दक्षिण भारतीय पकवानों के साथ कई व्यंजन परोसे गए।

'एट होम' रिसेप्शन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, दिल्ली के उपराज्यपाल

वी.के. सक्सेना, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान और डॉ. एस जयशंकर समेत कई हस्तियां शामिल हुईं।

जानी-मानी हस्तियों के अलावा विशेष रूप के आमंत्रित लोगों में ड्रोन दीदी, स्टार्टअप के संस्थापकों, प्राकृतिक खेती करने वाले किसान, उपलब्धियां हासिल करने वाले दिव्यांग और अन्य लोग भी थे। दिव्यांगों के साथ उनके सहायकों को भी आमंत्रित किया गया था।

'एट होम' रिसेप्शन के मेन्यू में गोंगुरा अचार भरे कुजी पनियारम (सोरल पत्ते के अचार के साथ तले हुए किण्वित चावल के पकौड़े), टमाटर-मूंगफली की चटनी के साथ आंध्र मिनी-प्याज समोसा, करुवेपिलाई पोड़ी घी मिनी रागी इडली शामिल थे।

इसके अलावा मेन्यू में उडुपी उडिना वड़ा (कुरकुरे दाल के पकौड़े), पोड़ी के साथ मिनी मसाला उत्तपम, कोंडकडलाई सुंडल (मसालों के साथ तले हुए चने), मुरुक्कू, केले के चिप्स, और टैपिओका चिप्स भी परोसे गए थे।

साथ ही मिठाइयों में रवा केसरी (सूजी, घी, चीनी और केसर से बनी मिठाई), परिप्पु प्रदमन (पाम गुड़ के साथ दाल नारियल दूध की खीर), मैसूर पाक, सूखे मेवे पुथरेकलु (गुड़ और मेवों के साथ चावल के स्टार्च की परतदार पेस्ट्री) और रागी लड्डू परोसा गया।

राष्ट्रपति कार्यालय ने एक्स अकाउंट पर कुछ तस्वीरें शेयर की। उन्होंने लिखा, "राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 76वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति भवन में "एट होम" रिसेप्शन का आयोजन किया। महत्वपूर्ण गणमान्य व्यक्तियों के अलावा, विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले कई प्रतिष्ठित नागरिकों ने सरकार के विभिन्न विकास कार्यक्रमों के लाभार्थियों के साथ जगह साझा की। मेहमानों ने कार्यक्रम के दौरान प्रदर्शित जीवंत कलात्मक और सांस्कृतिक तत्वों का आनंद लिया।

ज्वलंत मुद्दा सम्पादकीय

मुख्यमंत्री सिद्धारमैया पर भ्रष्टाचार के आरोपों पर कांग्रेस चुप क्यों

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने दिल्ली में अपनी पहली चुनावी रैली को संबोधित करते हुए केजरीवाल पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि अरविंद केजरीवाल पीएम मोदी की तरह झूठे वादे करते हैं। केजरीवाल ने कहा था कि भ्रष्टाचार मिटाएंगे लेकिन क्या दिल्ली में भ्रष्टाचार हटा क्या? अडानी पर भी केजरीवाल कुछ भी नहीं बोलते हैं। राहुल गांधी ने जब केजरीवाल पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए उसी समय कर्नाटक की कांग्रेस सरकार के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और अन्य के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय ने (ईडी) ने मैसूर शहरी विकास प्राधिकरण (एमयूडीए) मामले के संबंध में 300 करोड़ रुपये के बाजार मूल्य वाली 142 अचल संपत्तियों को जब्त कर लिया। ईडी के बेंगलुरु जोनल कार्यालय ने धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए), 2002 के प्रावधानों के तहत इन संपत्तियों को जब्त किया। ईडी के अनुसार, ये संपत्तियां विभिन्न व्यक्तियों के नाम पर पंजीकृत हैं जो रियल एस्टेट व्यवसायी और एजेंट के रूप में काम कर रहे हैं। ईडी ने लोकायुक्त पुलिस मैसूर द्वारा भारतीय दंड संहिता, 1860 और भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 की विभिन्न धाराओं के तहत सिद्धारमैया और अन्य के खिलाफ दर्ज की गई प्राथमिकी के आधार पर जांच शुरू की थी। आतंरिक तौर पर देखें तो राहुल गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे में इतना साहस भी नहीं हो सका कि कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया को मुख्यमंत्री पद से हटाना तो दूर बल्कि कारण बताओ नोटिस तक जारी कर सकें। दरअसल कांग्रेस को अंदाजा है कि यदि सिद्धारमैया से कुछ भी पूछा गया तो विद्रोह की नौबत आ जाएगी। ऐसे में कांग्रेस ने इस मुद्दे पर चुप्पी साधे रखना ही सही समझा। कांग्रेस को शायद यह बात समझ में नहीं आई कि उसकी चुप्पी ही उसे अपराधी बना रही है। यही वजह है कि भाजपा ने विगत चुनावों में भ्रष्टाचार के मुद्दों पर कांग्रेस की बखिया में कोई कसर बाकी नहीं रखी। दरअसल कमजोर होती कांग्रेस में इतने क्षत्रप पनप गए हैं कि पार्टी चाह कर भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। ऐसे में भ्रष्टाचार हो या पार्टी विरोधी गतिविधियां, कांग्रेस खिसकते जनाधार के कारण यह जहर पीने को मजबूर हो गई है।

SYED ZAKI HAIDER
(EDITOR / PUBLISHER CUM MANAGING DIRECTOR
OF NAI UMMEED NEWS AGENCY
MOBILE NO. 9911371802
EMAIL SYEDZAKIHAIDER786@GMAIL.COM

हिंडनबर्ग मामले में सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई से किया इनकार

नूना न्यूज एजेंसी।

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने हिंडनबर्ग मामले में आगे सुनवाई जारी रखने से साफ इनकार कर दिया है. कोर्ट ने इस मामले में दाखिल याचिका को भी खारिज कर दिया है. साथ ही कोर्ट ने याचिकाकताओं से पूछा है कि बताएं कितना जुमार्ना लगाया जाए. आपको बता दें कि हिंडनबर्ग मामले में याचिकाकर्ता विशाल तिवारी ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल की थी. हालांकि, 5 अगस्त 2024 को सुप्रीम कोर्ट रजिस्ट्रार ने विशाल तिवारी की अर्जी को लिस्ट करने से इनकार कर दिया था। आपको बता दें कि कुछ दिन पहले ही अमेरिका स्थित शॉर्ट सेलर कंपनी हिंडनबर्ग रिसर्च को बंद करने का ऐलान किया गया था. इसकी घोषणा खुद इसके संस्थापक नैट एंडरसन ने की थी.नैट एंडरसर ने हिंडनबर्ग वेबसाइट पर एक नोट लिखकर कहा था कि मैंने हिंडनबर्ग रिसर्च को खत्म करने का निर्णय लिया है. जिन विचारों पर हम काम कर रहे थे, उन्हें पूरा करने के बाद योजना को बंद करने की योजना है. एंडरसन ने स्पष्ट किया है कि इस फैसले को बंद करने के पीछे कोई विशेष खतरा या व्यक्तिगत मुद्दा नहीं है। कंपनी के फाउंडर नैट एंडरसन ने सोशल मीडिया साइट एक्स पर लिखा था कि उन्होंने पिछले साल के अंत से ही अपने परिवार, दोस्तों और अपनी टीम के साथ ये बात शेयर की थी कि इस प्लानिंग के साथ कंपनी को शुरू किया गया था उन विचारों के पूरा होने के बाद हिंडनबर्ग रिसर्च को बंद कर दिया जाएगा. ये पहले ही प्लान किया गया था कि जिन विचारों के लिए वे काम कर रहे हैं, उनके पूरा होने के बाद कंपनी को बंद कर दी जाएगी. पिछले पोंजी मामलों के मुताबिक, जिन कामों के अभी पूरा किया है उनको विनियामकों के साथ शेयर करने के बाद वो दिन आ गया है।

आईआईटी करने वालों को नहीं मिल रही नौकरी

दलित और पिछड़ों को बनाया जा रहा गुलाम : राहुल गांधी

नूना न्यूज एजेंसी।

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता और लोकसभा नेता राहुल गांधी ने मध्य प्रदेश के महू में 'जय बापू, जय भीम, जय संविधान' रैली के दौरान भारत में निजीकरण पर निशाना साधा और आम लोगों को होने वाले नुकसान गिनाए। उन्होंने पूछा कि जब आईआईटी और आईआईएम के छात्रों को रोजगार नहीं मिल रहा है तो दूसरों को नौकरी कैसे मिलेगी। अपने संबोधन के दौरान उन्होंने पूछा कि लोग निजी अस्पतालों में इलाज कराते हैं और अपने बच्चों को निजी स्कूल-कॉलेजों में भेजते हैं लेकिन इस निजीकरण का मालिक कौन है? लोकसभा नेता प्रतिपक्ष ने भारतीय शिक्षा प्रणाली पर जोर दिया और कहा कि इसे एक स्टांप प्रणाली में बदल दिया गया है जहां माता-पिता प्रमाणन

प्राप्त करने के लिए करोड़ों रुपये खर्च करते हैं। गांधी ने कहा कि शिक्षा और स्वास्थ्य प्रणाली के निजीकरण का मालिक कौन है? भारतीय शिक्षा प्रणाली स्टांप की प्रणाली है, प्रमाणन की प्रणाली है। करोड़ों लोग सोचते हैं कि ऐसे प्रमाणन के बाद, अरबपतियों को लाखों रुपये देने के बाद उनके बच्चों को रोजगार मिलेगा। यह सफेद झूठ है। आपके बच्चों को इस देश में रोजगार नहीं मिल सकता, चाहे वे कुछ भी कर लें। अरबपतियों ने देश की रोजगार व्यवस्था को नष्ट कर दिया है। आजादी एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर थी क्योंकि उसके बाद पहली बार हिंदुस्तान के दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों और गरीबों को संविधान द्वारा अधिकार मिले। मगर, मोहन भागवत कहते हैं कि वो सच्ची आजादी नहीं थी - वो इसलिए क्योंकि बीजेपी और आरएसएस भारत के संविधान को नहीं मानते। वो बहुजनों और गरीबों से उनके अधिकार छीन कर उन्हें फिर से गुलाम बनाना चाहते हैं। मोहन भागवत ने कुछ दिन पहले संविधान का अपमान किया। उनके मुताबिक देश को जो आजादी मिली, वो सच्ची आजादी नहीं थी। इसका मतलब है कि मोहन भागवत संविधान को नहीं मानते हैं। उन्होंने बाबा साहेब अंबेडकर जी, संविधान का अपमान किया है। कांग्रेस के बब्बर शेरों का काम संविधान की रक्षा करना है। बीजेपी आरएसएस के लोग जहां भी संविधान का अपमान करते हुए दिखें, वहां उन्हें चट्टान की तरह खड़ा होना है। मैं उन सभी कार्यकताओं को धन्यवाद देता हूं, जो हमारी विचारधारा और संविधान के लिए लड़ते हैं।

वक्फ संशोधन विधेयक को जेपीसी की मंजूरी, होंगे इतने संशोधन

नूना न्यूज एजेंसी।

वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2024 की जांच कर रही संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) ने सत्तारूढ़ भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए सदस्यों द्वारा प्रस्तावित सभी संशोधनों को अपनाया और खंड-दर-खंड चर्चा में विपक्षी सदस्यों द्वारा पेश किए गए हर बदलाव को खारिज कर दिया। संसदीय समिति की अगुवाई कर रहे बीजेपी सांसद जगदंबिका पाल ने कहा कि एनडीए सांसदों की ओर से पेश किए गए 14 संशोधनों को स्वीकार कर लिया गया जबकि विपक्ष की ओर से पेश किए गए सभी संशोधनों को खारिज कर दिया गया। कुछ संशोधनों में जिला मजिस्ट्रेटों के साथ-साथ राज्य सरकार के अधिकारियों को कुछ भूमिकाओं के लिए नियुक्त करने की अनुमति देना और वक्फ ट्रिब्यूनल के सदस्यों को दो से बढ़ाकर तीन सदस्य करना भी शामिल है। खंड-दर-खंड मतदान में सत्तारूढ़ सरकार के 16 सांसदों ने संशोधनों के पक्ष में मतदान किया, जबकि 10 विपक्षी सदस्यों ने उनके खिलाफ मतदान किया। विधेयक के सभी 44 खंडों में शामिल विपक्ष के संशोधन, समान 10:16 बहुमत से पराजित हो गए। जेपीसी ने घोषणा की कि मसौदा रिपोर्ट 28 जनवरी तक प्रसारित की जाएगी और फिर 29 जनवरी को औपचारिक रूप से अपनाई जाएगी। विपक्षी सांसदों ने बैठक की कार्यवाही की आलोचना की और पाल पर लोकतांत्रिक प्रक्रिया को विकृत करने का आरोप लगाया। टीएमसी सांसद कल्याण बनर्जी ने संवाददाताओं से कहा कि यह एक हास्यास्पद अभ्यास था। हमारी बात नहीं सुनी गई। पाल ने तानाशाही तरीके से काम किया है।

आरबीआई ने बैंकिंग प्रणाली में नकदी डालने के उपायों की घोषणा की

दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने बैंकिंग प्रणाली में तरलता (नकदी) बढ़ाने के लिए सोमवार को तीन किस्तों में 60,000 करोड़ रुपये की सरकारी प्रतिभूतियां खरीदने और कई अन्य कदमों की घोषणा की। आरबीआई ने बैंकिंग तरलता की स्थिति के प्रबंधन उपायों के तहत 31 जनवरी, 2025 को छह महीने की अवधि के लिए पांच अरब डॉलर के अमेरिकी डॉलर/रुपये की खरीद/बिक्री अदला-बदली नीलामी की भी घोषणा की। केंद्रीय बैंक ने तरलता बढ़ाने के लिए कहा कि 30 जनवरी, 13 फरवरी और 20 फरवरी को 20,000 करोड़ रुपये की तीन किस्तों में कुल 60,000 करोड़ रुपये की राशि के लिए भारत सरकार की प्रतिभूतियों की मुक्त बाजार परिचालन (ओएमओ) खरीद नीलामी आयोजित की जाएगी। इसके अलावा, 50,000 करोड़ रुपये की अधिसूचित राशि के लिए 56-दिवसीय परिवर्तनीय दर रेपो (वीआरआर) नीलामी भी सात फरवरी को आयोजित की जाएगी। आरबीआई ने कहा, केंद्रीय बैंक उभरती हुई तरलता और बाजार स्थितियों की निगरानी करना जारी रखेगा और व्यवस्थित नकदीकी स्थिति सुनिश्चित करने के लिए उचित उपाय करेगा। केंद्रीय बैंक ने कहा कि प्रत्येक परिचालन के लिए विस्तृत निर्देश अलग से जारी किए जाएंगे।

तेलंगाना में एक व्यक्ति की हत्या

झूठी शान के नाम पर जान लेने की आशंका

नूना न्यूज एजेंसी।

तेलंगाना। में सूर्यपेट जिले के पिल्लालामर्री गांव में भिन्न जाति की एक महिला से शादी करने करने वाले अनुसूचित जाति के एक व्यक्ति की कथित रूप से हत्या कर दी गयी। पुलिस ने यह जानकारी दी। इस व्यक्ति की पत्नी ने अपने मायके वालों पर झूठी शान के लिए उसके पति की हत्या करने का आरोप लगाया है। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि वडलाकोना कृष्णा (32) नामक इस व्यक्ति ने छह महीने पहले दूसरी जाति की एक महिला से उसके माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध विवाह किया था। महिला ने अपने मायके वालों पर आरोप लगाया है कि उसके पति की हत्या करने के लिए उन्होंने सुपारी दी थी। अधिकारी ने पीटीआई-भाषा से कहा, अबतक यह स्पष्ट नहीं है कि इस हत्या के पीछे क्या वजह है। उसकी पत्नी अपने मायके वालों पर हत्या का आरोप लगा रही है। हमारी प्राथमिक जांच से पता चलता है कि कृष्णा कुछ समझौतों में भी शामिल था। उन्होंने कहा कि इस मामले की सभी कोणों से जांच की जा रही है।

करियप्पा परेड मैदान में एनसीसी पीएम रैली को प्रधानमंत्री मोदी ने किया संबोधित

भारत के युवाओं को बताया फोर्स फॉर ग्लोबल गुड

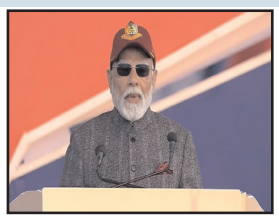

दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज राष्ट्रीय राजधानी के करियप्पा परेड मैदान में वार्षिक एनसीसी पीएम रैली को संबोधित किया। पीएम मोदी ने कहा कि आप सभी को एनसीसी दिवस के अवसर पर बहुत-बहुत शुभकामनाएं। आज यहां हमारे बीच 18 मित्र देशों के भी करीब 150 कैडेट्स भी मौजूद हैं, मैं इन सभी कैडेट्स का भी स्वागत करता हूं। गणतंत्र दिवस की परेड में सेलेक्ट होना अपने आप में ही उपलब्धि है। इस बार की परेड इसलिए भी खास थी क्योंकि हमारे गणतंत्र ने 75 साल पूरे किए हैं। 75 वर्षों के गणतंत्र में भारत के संविधान ने हर समय देश को लोकतांत्रिक प्रेरणा दी, नागरिक कर्तव्यों का महत्व समझाया। इसी तरह एनसीसी ने भी हर समय भारत के नौजवानों को राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा दी और उन्हें अनुशासन का महत्व समझाया। पीएम मोदी ने कहा कि आप 21वीं सदी में भारत के विकास को, दुनिया के विकास को निर्धारित करने वाले हैं। भारत के युवा सिर्फ भारत के लिए ही नहीं, बल्कि फोर्स फॉर ग्लोबल गुड्स हैं। आज दुनिया इस बात को मान रही है। कोई भी व्यक्ति हो, या देश... उसका सामर्थ्य तब बढ़ता है, जब वह अनावश्यक बाधाओं से पार पा लेता है। मुझे संतोष है कि भारत में युवाओं के सामने रहीं अनेक बाधाओं को बीते 10 वर्षों में हमने हटाने का काम किया है। इससे युवाओं का सामर्थ्य बढ़ा है, देश का सामर्थ्य बढ़ा है। इस अमृतकाल में हमें अपना एक ही लक्ष्य रखना है- विकसित भारत। हमारे हर निर्णय की कसौटी, हर हर कार्य की कसौटी विकसित भारत ही होनी चाहिए। इसके लिए हमें अपने पंच प्राणों को हमेशा याद रखना है।

तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी मध्य प्रदेश में कांग्रेस की रैली में शामिल होंगे

नूना न्यूज एजेंसी।

तेलंगाना। के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी और उपमुख्यमंत्री मल्लू भट्टी विक्रमार्क सोमवार को मध्य प्रदेश के महू में जय बापू, जय भीम, जय संविधान रैली में शामिल होंगे। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि उनके शाम तक तेलंगाना लौट आने की संभावना है। टीपीसीसी अध्यक्ष महेश कुमार गौड़, कुछ मंत्री और कांग्रेस सांसद भी बैठक में भाग लेंगे। पार्टी ने बताया कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के अलावा वायनाड से सांसद प्रियंका गांधी रैली को संबोधित करेंगी। इंदौर से लगभग 25 किलोमीटर दूर स्थित महू संविधान निमार्ता डॉ. बी.आर. आंबेडकर का जन्मस्थान है।

मणिपुर के कांगपोकपी में हथियार एवं गोला-बारूद बरामद

मणिपुर। के कांगपोकपी जिले में सुरक्षा बलों ने एक तलाशी अभियान के दौरान हथियार और गोला-बारूद बरामद किए हैं। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि उसने रविवार को जिले के नेपाली बस्ती इलाके के पास तलाशी अभियान चलाया और तीन राइफल, एक पिस्तौल, दो मोर्टार, पांच गोलियां, दो हथगोले और एक मोबाइल फोन जब्त किया। पूर्वोत्तर राज्य में मई 2023 में जातीय हिंसा भड़कने के बाद से पूरे मणिपुर में तलाशी अभियान चलाए जा रहे हैं। राज्य में जातीय हिंसा में 250 से अधिक लोग मारे गए हैं और हजारों लोग बेघर हो गए हैं।

स्वाभिमान एक प्रयास कुसुम लता मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट संस्था ने दिल्ली के स्ट्रीट बच्चों के साथ मनाया गणतंत्र दिवस

रिपोर्ट :- रजत शर्मा

मथुरा। स्वाभिमान एक प्रयास कुसुम लता मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट संस्था के द्वारा मथुरा और दिल्ली में मनाया गया बड़ी धूमधाम से गणतंत्र दिवस का उत्सव। इस बार स्ट्रीट बच्चों के साथ संस्था की राष्ट्रीय अध्यक्ष सरोज शर्मा एवं सदस्यों के साथ गणतंत्र दिवस का उत्सव दिल्ली में स्ट्रीट बच्चों के साथ मनाया सर्वप्रथम ध्वजारोहण करने के बाद स्ट्रीट बच्चों के साथ रंगारंग प्रोग्राम के बाद उन्हें मिठाइयां वितरित की उधर मथुरा से प्रदेश अध्यक्ष

अनीता शर्मा ने भी संस्था के सदस्यों सहित बच्चों के साथ ध्वजारोहण करके मिठाई वितरित की। संस्था की राष्ट्रीय अध्यक्ष सरोज शर्मा ने संक्षिप्त में बताते हुए कहा कि बच्चों को शिक्षा के प्रति हजारों करना हमारी संस्था का उद्देश्य है। संस्था से राष्ट्रीय अध्यक्ष सरोज शर्मा प्रदेश अध्यक्ष अनीता हरियाणा, अनीता, आरती, पूनम शर्मा, रजनी शर्मा, वैशाली शर्मा, चित्रा शर्मा, रोहिणी शर्मा, सपना राजपूत, डॉली राजपूत, रुचि सक्सैना, रश्मि शर्मा, नीतू सारस्वत सरस्वती, लक्ष्मी, सुनीता, आदि लोग उपस्थित रहे।

जन नायक श्री राहुल गांधी जी कांग्रेस उम्मीदवारों के समर्थन में कल 28 जनवरी को पटपड़गंज और ओखला की जनसभाओं को संबोधित करेंगे।

कांग्रेस सत्ता में आने पर बंद पड़े अल्पसंख्यक आयोग को शुरू करेगी और जैन कल्याण बोर्ड का गठन होगा। - प्रदीप जैन आदित्य

नई दिल्ली, 27 जनवरी, 2025 - दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी कार्यालय राजीव भवन में आयोजित संवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए पूर्व केबिनेट मंत्री श्री प्रदीप जैन आदित्य ने कहा कि घोषणा की कि कल 28 जनवरी, 2025 को जन नायक नेता प्रतिपक्ष लोकसभा श्री राहुल गांधी जी दिल्ली विधानसभा चुनावों में कांग्रेस उम्मीदवारों के समर्थन में पटपड़गंज और औखला विधानसभा में आयोजित जन सभाओं को संबोधित करेंगे। श्री प्रदीप जैन आदित्य ने कहा कि मैं आज बेहद संवेदनशील मुद्दे पर आपके बीच चर्चा करने आया हूँ। मैं कहना चाहता हूँ कि दिल्ली में कांग्रेस की सरकार बनने पर 2023 से बंद पड़े अल्पसंख्यक आयोग को शुरू करके अल्पसंख्यकों के संरक्षण, उनके अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करेंगे और जैन कल्याण बोर्ड का गठन भी करेंगे। आज 27 जनवरी को जैन समाज संवैधानिक अधिकार दिवस के रुप में मनाता है।

भारत के समुद्री क्षेत्र में तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देने के लिए ऐतिहासिक पहल

नई दिल्ली, जनवरी : भारत के समुद्री क्षेत्र में तकनीकी नवाचार और उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से शिपिंग महानिदेशालय (डीजीएस) और इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एमईआईटीवाई) के तहत वैज्ञानिक सोसायटी, सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (सी-डैक) ने एक ऐतिहासिक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। यह हस्ताक्षर एमईआईटीवाई में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में किए गए, जिसमें शिपिंग महानिदेशक श्याम जगन्नाथन और सी-डैक महानिदेशक ई. मगेश ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर एमईआईटीवाई के सचिव एस. कृष्णन, अपर सचिव अभिषेक सिंह, और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। समझौता ज्ञापन का उद्देश्य समुद्री प्रशासन को अत्याधुनिक तकनीक के माध्यम से आधुनिक बनाना और समुद्री उद्योग में नवाचार और सहयोग को बढ़ावा देना है। इस पहल के तहत सी-डैक की विशेषज्ञता, जैसे उच्च प्रदर्शन कंप्यूटिंग, साइबर सुरक्षा, ब्लॉकचेन और ई-गवर्नेंस, को समुद्री प्रशासन की जरूरतों के साथ एकीकृत किया जाएगा। इससे न केवल समुद्री प्रक्रियाओं का डिजिटलीकरण और स्वचालन होगा, बल्कि डेटा विश्लेषण और पूर्वानुमानित मॉडलिंग में भी सुधार आएगा। साथ ही, यह समुद्री क्षेत्र में साइबर सुरक्षा, समुद्री आईओटी, शिक्षा और अनुसंधान को भी बढ़ावा देगा। यह साझेदारी शिपिंग महानिदेशालय के वैश्विक मानकों के अनुरूप प्रगतिशील और सशक्त समुद्री प्रशासन बनने के दृष्टिकोण का प्रतीक है। समझौते के माध्यम से समुद्री प्रौद्योगिकी को अधिक टिकाऊ और प्रभावी बनाया जाएगा, जिससे समुद्री क्षेत्र में चुनौतियों का समाधान और नए अवसरों का निर्माण होगा। इस पहल का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू समुद्री शिक्षा और प्रशिक्षण में सुधार लाना है, जिससे इस क्षेत्र में उन्नत कौशल और प्रौद्योगिकी-आधारित समाधान तैयार किए जा सकें। यह सहयोग भारत में एक टिकाऊ और उन्नत समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह ऐतिहासिक समझौता भारतीय समुद्री उद्योग के कायाकल्प की दिशा में एक मील का पत्थर है, जो प्रौद्योगिकी और नवाचार के माध्यम से इसे विश्व स्तरीय बनाएगा।

आज कांग्रेस अध्यक्ष श्री मल्लिकार्जुन खरगे ने देश के शाह और शहंशाह को राजधर्म याद दिलाया।

दिल्ली। उन्होंने वही कहा जो भीष्म ने युधिष्ठिर को कहा था; जो कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में लिखा और जो संघ की सबसे प्रिय

पुस्तक मनुस्मृति में भी लिखा है - प्रजा का हित ही राजा का धर्म है। पिछले दस वर्षों से धर्म के पीछे छिप कर देश का राजा अपनी ज़िम्मेदारियों से बचता हुआ घूम रहा है। खरगे साहब ने तो सिर्फ. राजधर्म की सीख दी, पूरी भाजपा ऐसे बिलबिला रही है जैसे पूरी पार्टी की दाढ़ी में तिनका मिल गया हो।

आखिर क्यों ?

क्यूंकि एक दलित ने आपको राजधर्म सिखाने की जुर्रत कर दी।

मुख्यमंत्री धामी ने दिल्ली में संभाली चुनाव प्रचार की कमान

- पटेल नगर विधानसभा क्षेत्र में जनसभा को संबोधित कर भाजपा को जिताने की अपील की

नई दिल्ली, जनवरी : दिल्ली में पटेलनगर विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी राजकुमार आनंद के पक्ष में आयोजित जनसभा को संबोधित करते उत्तराखंड के माननीय मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने दिल्ली की जनता से भाजपा को प्रचंड बहुमत से जिताने की अपील की। उन्होंने दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार की विफलताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि दिल्लीवासियों को शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य बुनियादी सुविधाओं के नाम पर सिर्फ धोखा दिया गया है। मुख्यमंत्री धामी ने कहा, दिल्ली में विधानसभा चुनावों में भाजपा को विजयी बनाने के लिए मुझे पूर्ण विश्वास है कि दिल्ली की विकासपरक जनता भाजपा के पक्ष में मतदान करेगी। उन्होंने पार्टी के कार्यों और सरकार की

उपलब्धियों का उल्लेख करते कहा कि भाजपा ने जो भी संकल्प लिए हैं, उन्हें पूर्ण किया है। कश्मीर से धारा 370 का हटना, अयोध्या में श्रीराम मंदिर का निर्माण और अब समान नागरिक संहिता कानून लागू करना हमारे विकासात्मक दृष्टिकोण का हिस्सा है। उन्होंने आगे कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में उत्तराखंड में समान नागरिक संहिता कानून लागू किया जा रहा है, साथ ही दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे के लोकार्पण से दिल्ली और उत्तराखंड के बीच यात्रा आसान होगी, जो राज्य के विकास में अभूतपूर्व योगदान देगा।

अमरीका और कनाडा में विस्तार की तैयारी में एलीट एलीवेटर्स, सस्टेनेबिलिटी पर जोर

नई दिल्ली, जनवरी : प्रीमियम होम लिफ्ट ब्रांड एलीट एलीवेटर्स ने अत्याधुनिक एक्स300 और एक्स300 प्लस होम लिफ्ट्स लॉन्च की हैं। ये लिफ्ट्स उन्नत तकनीक, लक्जरी और सस्टेनेबिलिटी का अनोखा मेल हैं। कंपनी का लक्ष्य 2025 में अमेरिका और कनाडा जैसे बाजारों में विस्तार करना है। एलीट एलीवेटर्स के सीईओ विमल बाबू ने कहा, हमारा उद्देश्य स्मार्ट और टिकाऊ होम लिफ्ट्स के जरिए प्रीमियम अनुभव प्रदान करना है।

नई रेंज से हमें वैश्विक बाजार में अग्रणी बनने का भरोसा है। एक्स300 तेज गति (1 मीटर/सेकंड), गियरलेस बेल्ट ड्राइव सिस्टम और मल्टी-मोड ऑप्शन्स (स्पोर्ट्स, इको आदि) जैसी विशेषताओं से लैस है। वहीं, एक्स300 प्लस में कस्टमाइजेबल फ्लोर नेम्स, स्क्रीनसेवर्स, ऐप-बेस्ड कंट्रोल, और वॉइस अनाउंसमेंट जैसी अत्याधुनिक सुविधाएँ शामिल हैं। दोनों लिफ्ट्स टिकाऊ, कम मेंटेनेंस और पर्यावरण-अनुकूल हैं।

दिल्ली में कांग्रेस की वापसी तय है क्योंकि हवा कांग्रेस के पक्ष में चल रही है : सचिन पॉयलट

नई दिल्ली, जनवरी : दिल्ली विधानसभा चुनावों में कांग्रेस उम्मीदवारों के पक्ष में आज कांग्रेस महासचिव, राजस्थान के पूर्व उप मुख्यमंत्री श्री सचिन पॉयलट ने मादीपुर विधानसभा में आयोजित विशाल जनसभा को सम्बोधित किया। विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए सचिन पॉयलट ने कहा कि 5 तारीख को दिल्ली में नई सरकार के चयन के लिए चुनाव होना है, राजधानी होने के कारण यहां का चुनाव महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि देश और राजधानी दिल्ली में महंगाई और बेरोजगारी बहुत बड़ी परेशानी है। केन्द्र में मोदी जी और दिल्ली में अरविन्द केजरीवाल ने लाखों करोड़ों रोजगार देने का झूठा वादा किया था आज अपने चुनाव प्रचार में भाजपा और आम आदमी पार्टी इन मुख्य मुद्दो पर बात करने से भाग रहे है। उन्होंने कहा कि सफाई कर्मचारियों को पक्का करने और नई भर्ती करने वादा करने के बाद निजीकरण कर दिया। केजरीवाल ने दिल्ली के दलितों को धोखा दिया है और फिर एक बार फिर सफाई

सचिन पॉयलट

कर्मचारियों को मकान देने का जुमला फैंक कर दिल्ली के दलितो विशेष तौर पर बाल्मीकि समाज के लोगों को ठगने की रणनीति तैयार की है। उन्होंने कहा कि दिल्ली में 35-40 प्रतिशत दलित वोटर हैं। लगातार 10 वर्षों तक दलितों के कंधे पर सवार होकर सरकार चलाने के बाद भी केजरीवाल ने दलितों के लिए कोई काम नही किया तो दलितों से वोट मांगने का कोई अधिकार नही है। मैं दिल्ली की जनता से अपील करता हूँ कि अगर दिल्ली को महंगाई मुक्त बनाना है, रोजगार सृजन करने है, 11 साल पहले वाली दिल्ली, विकास वाली दिल्ली, हरित दिल्ली, प्रदूषण मुक्त दिल्ली चाहिए तो 5 फरवरी को कांग्रेस को वोट करें। श्री सचिन पॉयलट ने कहा कि पिछले 11 वर्षों में अरविन्द केजरीवाल और भाजपा ने वादा किया था कि हम दिल्ली के हर मर्ज की दवा देंगे, लेकिन शराब घोटाला, शीश महल और राजमहल जैसे भ्रष्टाचार किया और अगर बाहर निकलकर सड़कों, पार्किंग, नशे, सुरक्षा, स्वास्थ्य, प्रदूषण, गंदगी को देखें तो दोनो ने राजधनी को खंडहर बना दिया है।

एसडी कालेज में 15वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम कर दिलाई शपथ

एसडी कालेज में राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम में शपथ दिलाते हुए प्राचार्य डा. अनुपम अरोड़ा। (मोहन लाल)

पानीपत, जनवरी : एसडी पीजी कालेज की राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा 15वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम और शपथ ग्रहण का आयोजन किया गया। जिसमें प्राचार्य डा. अनुपम अरोड़ा ने एनएसएस अधिकारीयों डा. राकेश गर्ग, डा. मुकेश पुनिया, डा. एसके वर्मा, डा. वीरेंद्र गिल, एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट डा.बलजिंदर सिंह, डा. प्रियंका चांदना, प्रो. प्रवीण कुमारी के साथ उपस्थित एनएसएस स्वयंसेवकों व विद्यार्थियों को निर्भीकता, जागरूकता और निरंतरता के साथ वोट डालने की शपथ दिलाई। प्राचार्य डा. अनुपम अरोड़ा ने कहा कि राष्ट्रीय मतदाता दिवस को मनाने का उद्देश्य युवाओं में वोट के महत्व और प्रजातन्त्र के प्रति उनकी जिम्मेदारियों का बोध करवाना है। वहीं मतदान डालने और अच्छी सरकार को चुनने के लिए समाज को जागृत करने के लिए मतदाता रैली निकाली गई। ऐसे में प्राचार्य ने विद्यार्थियों से वोट अवश्य डालने का प्रण लिया।

निर्वाचन आयोग ने दिल्ली में पानी में अमोनिया के स्तर पर हरियाणा से तथ्यात्मक रिपोर्ट मांगी

दिल्ली। निर्वाचन आयोग ने दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी द्वारा पड़ोसी राज्य हरियाणा से आपूर्ति किए जाने वाले पानी में अमोनिया के स्तर को लेकर लगाए गए आरोपों पर सोमवार को हरियाणा से तथ्यात्मक रिपोर्ट मांगी। दिल्ली और पंजाब के मुख्यमंत्रियों ने पानी में अमोनिया के स्तर को लेकर सोमवार को निर्वाचन आयोग (ईसी) से गुहार लगाई। उन्होंने आरोप लगाया कि हरियाणा से राष्ट्रीय राजधानी में आपूर्ति किए जाने वाले पानी में अमोनिया का स्तर अधिक होने के कारण विधानसभा चुनाव प्रक्रिया के दौरान पानी की आपूर्ति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। सूत्रों ने बताया कि निर्वाचन आयोग ने हरियाणा सरकार को मंगलवार दोपहर तक इस मामले पर तथ्यात्मक रिपोर्ट पेश करने का निर्देश दिया है। दिल्ली की 70 सदस्यीय विधानसभा के लिए पांच फरवरी को मतदान होगा और मतों की गिनती आठ फरवरी को होगी।

केजरीवाल का दिल्ली में एक और बड़ा धमाका

15 गारंटी का चुनावी घोषणा पत्र किया जारी

दिल्ली। आप संयोजक अरविंद केजरीवाल ने पार्टी के घोषणापत्र का अनावरण करते हुए संकल्प लिया कि सत्ता में आने के बाद वह दिल्ली की सभी महिलाओं को 2100 रुपये मासिक देंगे। आज दिल्ली में अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान केजरीवाल ने 15 गारंटियों की घोषणा की जिन्हें अगले पांच वर्षों में पूरा किया जाएगा। दिल्ली के लोगों के साथ हमारा रिश्ता वादों का नहीं बल्कि गारंटी का है। हमने जो कहा है वो करेंगे। केजरीवाल की गारंटी का मतलब है पक्की बात। इस बीच, पूर्व कांग्रेस प्रमुख राहुल गांधी, जो पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ हैं, दिल्ली विधानसभा चुनाव अभियान के हिस्से के रूप में इस महीने के अपने पहले संबोधन के बाद, राष्ट्रीय राजधानी में अपनी दूसरी रैली को संबोधित करने के लिए तैयार हैं।

आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य की ओर कदम, विमान मरम्मत और रखरखाव के लिए अत्याधुनिक सुविधाएं

नई दिल्ली, जनवरी : हैवस एरोटेक ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर घोषणा की कि कंपनी ने कोलकाता के बैरकपुर में दो एकड़ जमीन खरीदी है। इस जमीन पर कंपनी अपने नए एमआरओ (मरम्मत, रखरखाव और ओवरहॉलिंग) केंद्र की स्थापना करेगी। यह केंद्र विमान के पहिए, ब्रेक, नेविगेशन और संचार उपकरणों की मरम्मत और अपग्रेडेशन करेगा। भविष्य में जटिल उपकरण, जैसे रेडोम्स, ऑक्सीलरी पावर यूनिट्स और लैंडिंग गियर्स की मरम्मत भी यहां की जाएगी। केंद्र की निकटता नेताजी सुभाष चंद्र बोस अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से मात्र 11.5 किलोमीटर है, जिससे एयरलाइंस को मरम्मत और रखरखाव में सुविधा होगी। यह परियोजना आत्मनिर्भर भारत के तहत भारत को विमानन और रक्षा क्षेत्र में सशक्त बनाने के उद्देश्य से 50 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश करेगी। हैवस एरोटेक के संस्थापक अंशुल भार्गव ने बताया कि कोलकाता का चयन पूर्वी भारत और पड़ोसी देशों, जैसे म्यांमार, बांग्लादेश और नेपाल की एमआरओ आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया गया है। कोलकाता के बाद कंपनी मुंबई में एक बड़ा एमआरओ हब बनाने की योजना पर भी काम कर रही है। यह परियोजना भारत को वैश्विक एमआरओ सेवाओं का एक प्रमुख केंद्र बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

नई दिल्ली : भारत यात्रा पर आए इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपनी बैठक से पहले हाथ मिलाते।

गणतंत्र दिवस पर आरपीएफ कर्मियों को राष्ट्रपति पुलिस पदक से किया सम्मानित

नई दिल्ली, जनवरी : गणतंत्र दिवस के अवसर पर भारत की माननीय राष्ट्रपति ने रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) और रेलवे सुरक्षा विशेष बल (आरपीएसएफ) के कर्मियों को उनकी विशिष्ट और सराहनीय सेवाओं के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक (पीएसएम) और सराहनीय सेवा पदक (एमएसएम) से सम्मानित किया। यह पुरस्कार उनके समर्पण, संसाधनशीलता और सेवा के प्रति उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किए गए। उत्तर मध्य रेलवे के प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त अमिय नंदन सिन्हा को उनकी विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किया गया। यह पदक सेवा के विशेष रूप से प्रतिष्ठित रिकॉर्ड को मान्यता प्रदान करता है। सराहनीय सेवा पदक (एमएसएम) उन कर्मियों को प्रदान किया गया जो कर्तव्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और संसाधनशीलता के लिए जाने जाते हैं। इस वर्ष सराहनीय सेवा पदक प्राप्त करने वालों में सचिन अशोक भलोदे (उत्तर रेलवे), पी.वी. संथाराम (दक्षिण पूर्व रेलवे), ए. इब्राहिम शेरिफ (दक्षिणी रेलवे), और अन्य कई कर्मी शामिल हैं। इनके अलावा महिला हेड कांस्टेबल आशा (पूर्वोत्तर रेलवे) को भी इस सम्मान से नवाजा गया। ये पदक भारतीय रेलवे की सुरक्षा सुनिश्चित करने और उच्चतम मानकों को बनाए रखने में आरपीएफ/आरपीएसएफ कर्मियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका को सम्मानित करने के लिए हर वर्ष गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस पर प्रदान किए जाते हैं। इन पुरस्कारों का उद्देश्य न केवल कर्मचारियों को प्रेरित करना है, बल्कि उनकी सेवा की उत्कृष्टता को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाना भी है।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर दिव्यांगजन के जीवन में बदलाव लाने का लिया संकल्प

नई दिल्ली, जनवरी : आइडियल आर्टिफिशियल लिम्ब्स सॉल्यूशन ने 25 जनवरी को गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया। सशक्त जीवन, समृद्ध राष्ट्र की थीम पर आधारित इस आयोजन का उद्देश्य दिव्यांगजन की आत्मनिर्भरता और गतिशीलता को प्रोत्साहित करना था। कार्यक्रम की शुरुआत ध्वजारोहण और प्रेरणादायक कहानियों से हुई, जिसमें कृत्रिम अंग प्राप्त करने वाले व्यक्तियों ने अपने अनुभव साझा किए। इसके साथ ही निःशुल्क जाँच शिविर और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आइडियल आर्टिफिशियल लिम्ब्स सॉल्यूशन के संस्थापक डॉ. अगेंद्र कुमार ने कहा, ह्यहम केवल कृत्रिम अंग प्रदान नहीं करते, बल्कि आत्मविश्वास और आशा लौटाने का प्रयास करते हैं। हमारा लक्ष्य एक समावेशी और सशक्त भारत बनाना है।

विक्टर पब्लिक स्कूल में गणतंत्र दिवस पर किया रंगारंग कार्यक्रम

पानीपत, जनवरी : तहसील कैंप स्थित विक्टर पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल में गणतंत्र दिवस के उपलक्ष में रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें स्कूल के विद्यार्थियों ने बढ़ चढकर भाग लिया। बानी एंड ग्रुप ने देश मेरे तेरी शान में, गीत पर जोशीला नृत्य प्रस्तुत कर बच्चों को नई उमंग से भर दिया। गणतंत्र दिवस के महत्व को और इतिहास को कीरत कक्षा पांचवी ने अपने शब्दों के द्वारा समझाने का प्रयत्न किया। एक कविता के द्वारा छात्रा चेतना कक्षा पांचवी ने वीरों को याद किया। विद्यालय की शिक्षिका मोनिका ने संविधान के विषय की जानकारी विस्तार से छात्रों को प्रदान की।

नई सरकार में मनीष सिसोदिया ही होंगे डिप्टी सीएम

चुनाव से पहले केजरीवाल का बड़ा ऐलान

दिल्ली। में 5 फरवरी को चुनाव होने हैं। दिल्ली की सभा 70 विधानसभा सीटों पर वोट डाले जाएंगे। हरेक पार्टी की ओर से चुनाव प्रचार जोरों पर हैं। इसी क्रम में अरविंद केजरीवाल ने जंगपुरा विधानसभा से आप के उम्मीदवार और पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के पक्ष में जनसभा को संबोधित किया। दिल्ली के पूर्व सीएम और आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने बड़ा ऐलान किया है। उन्होंने जंगपुरा में प्रचार के दौरान कहा कि आम आदमी पार्टी की नई सरकार में मनीष सिसोदिया ही डिप्टी सीएम होंगे। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि जनसभा में उपस्थित जनता ने साफ कर दिया है कि वो 5 फरवरी को झाड़ू का बटन दबाकर दिल्ली को बर्बाद करने की साज़िश रचने वाली बीजेपी को करारा सबक सिखाएगी और शिक्षा क्रांति के जनक मनीष सिसोदिया जी को ही जिताएगी। जनसभा को संबोधित करते हुए आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि जिस-जिस को जीरो बिजली का बिल चाहिए, वे आप को वोट दें और जिसको महंगी बिजली का बिल चाहिए वे भाजपा को वोट दें। भाजपा ने घोषणा कर दिया है कि अगर उनकी सरकार आई तो वे जीरो बिजली के बिल, बिजली पर सब्सिडी बंद कर देंगे... वे मुफ्त बिजली के खिलाफ हैं। पूरे देश में सिर्फ. दिल्ली और पंजाब में 24 घंटे और मुफ्त बिजली मिलती है, आप की 20 राज्यों में सरकार है, एक भी राज्य में 24 घंटे बिजली नहीं मिलती। अगर गलती से कमल का बटन दबा दिया तो आपकी बिजली गुल हो जाएगी। केजरीवाल ने कल्याणकारी योजनाओं को रेवड़ी बताने के लिए भाजपा पर निशाना साधा और आरोप लगाया कि भाजपा मध्यम वर्ग में अपराध बोध पैदा करने की कोशिश कर रही है, जबकि बड़े कारोबारियों को भारी छूट दी जा रही है। उन्होंने सवाल किया कि जब भाजपा अपने दोस्तों के हजारों करोड़ रुपये के कर्ज माफ करती है, तो क्या यह रेवड़ी नहीं है?

समाचार

राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं आरटीआई परिषद द्वारा ध्वजारोहण किया गया

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। रविवार को राष्ट्रीय मानव अधिकार एवं आरटीआई परिषद के मुख्य कार्यालय यदुवंशी धाम रहरा रोड हसनपुर पर राष्ट्रीय मानव अधिकार एवं आरटीआई परिषद के कार्यकताओं ने गणतंत्र दिवस का पर्व बड़े ही हर्ष उल्लास पूर्वक मनाया तथा कार्यालय पर ध्वजारोहण किया गया, राष्ट्रीय अध्यक्ष दीनदयाल यादव एडवोकेट द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया तथा राष्ट्रीय गान भी गाया गया, इसके उपरांत आईटीआई परिषद की बैठक भी की गई जिसमें सदस्य एवं पदाधिकारी को आई कार्ड भी वितरित किए गए इस मौके पर दीनदयाल यादव एडवोकेट ने बोलते हुए कहा कि हमारा संगठन हमेशा दबे कुचले शोषित लोगों के साथ हमेशा तत्पर है तथा हमारा संगठन भ्रष्टाचार के खिलाफ खड़ा है, इस मौके पर मुख्य रूप से राष्ट्रीय अध्यक्ष दीनदयाल यादव एडवोकेट, नेपाल सिंह यादव, परविंदर चौहान, प्रवीण कुमार, रजनी सिंह, धनेश्वरी, सीमा यादव, अरुण कुमार त्यागी, विजय पारछा, सचिन गुप्ता, मोहित त्यागी, अनुपम त्यागी, नीरज शर्मा, मनोज गोयल, गोविंद कौशिक, टेकचंद राणा, अली अहमद सैफी, वेद प्रकाश यादव, नेमपाल सिंह यादव, पूरन सिंह आदि लोग मौजूद रहे।

व्यापारी सुरक्षा फोरम संस्थान 74/22 द्वारा जनकपुरी में किया गया ध्वजारोहण

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। रविवार को नगर के मुख्य बाजार जनकपुरी में व्यापारी सुरक्षा फोरम संस्थान 74/22 के बैनर तले गणतंत्र दिवस का पर्व मनाते हुए व्यापारियों ने ध्वजारोहण किया, मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे पूर्व पालिका अध्यक्ष हरि सिंह सैनी एवं राकेश बंसल उर्फ कालू द्वारा ध्वजारोहण किया गया, तथा व्यापारियों ने राष्ट्रगान भी गाया, इस मौके पर व्यापारी नेता मुकेश गुप्ता ने व्यापारियों को गणतंत्र दिवस का महत्व बताया तथा प्रत्येक नागरिक से गणतंत्र दिवस जैसा पर मनाने की अपील की इस मौके पर मुख्य रूप से पूर्व पालिका अध्यक्ष हरि सिंह सैनी, राकेश बंसल उर्फ कालू, मुकेश गुप्ता, पंकज भटनागर, रानू रस्तोगी, जयप्रकाश अग्रवाल, लोकेश अग्रवाल, दिनेश अग्रवाल, तरुण अग्रवाल, सचिन गुप्ता, अरुण त्यागी, सीमा यादव, विजय पारछा, अंकित गुप्ता, सुशील भगत जी, नितेश अग्रवाल, आकाश अग्रवाल, मोहित सुशील अग्रवाल, मुकुल अग्रवाल, प्रशांत शर्मा, राजकुमार अग्रवाल ठोस वाले, मोहित त्यागी, अनुपम त्यागी, नीरज शर्मा आदि सहित भारी संख्या में व्यापारी गण मौजूद रहे।

बहुद्देशीय सहकारी समिति भदौरा पर शान से फहराया गया तिरंगा

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। रविवार को बहुद्देशीय सहकारी समिति भदौरा पर समस्त संचालक मंडल और क्षेत्रीय लोगों की मौजूदगी में मुख्य अतिथि जिला पंचायत सदस्य आकिब चौधरी एवं सभापति कृष्ण कुमार शर्मा ने संयुक्त रूप से तिरंगा फहराया। राष्ट्र गान के साथ ही देश की आजादी के लिए कुर्बानी देने वाले अमर शहीदों की याद में अमर रहें के नारे लगे। उपस्थित मुख्य अतिथि आकिब चौधरी ने कहा कि कुछ त्यौहार ऐसे होते हैं जिन्हें केवल उनके धर्म के अनुयायि मनाते हैं लेकिन गणतंत्र दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व है जिसे सभी भारतवासी मिलकर मना रहे हैं। कहा कि असंख्य क्रांतिकारियों की शहादत के बाद हमारा देश को आजादी मिली और 26 जनवरी 1950 को हमारा संविधान लागू हुआ तभी से इस तिथि को गणतंत्र दिवस के रूप में की मनाते आ रहे हैं।उन्होंने समिति परिसर में पक्का रास्ता बनवाने की भी घोषणा की। सभापति एवं संचालक मंडल ने इसके लिए उनका आभार जताया।इस अवसर पर उपसभापति समरपाल सिंह, सभापति सहकारी संघ कुंदरखी भूड़ करन सिंह, वही के उपसभापति सेवेंद्र पाल सिंह, पूर्व सभापति गजे सिंह, शाहनवाज चौधरी, नासिर चौधरी, राजवीर सिंह, आंकिक अतिकुर्रहमान, कंप्यूटर सहायक टिंकू कुमार, राम सिंह आदि मौजूद रहे।

आप और कांग्रेस पर बरसीं बसपा प्रमुख मायावती

लखनऊ। गणतंत्र दिवस पर पंजाब में डॉ. बीआर आंबेडकर की प्रतिमा के अनादर के मामले में बसपा प्रमुख मायावती ने आम आदमी पार्टी (आप) और कांग्रेस पर हमला बोला है। मायावती ने एक्स पर पोस्ट कर घटना को आम आदमी पार्टी के लिए शर्मनाक बताया है। इसके साथ ही बसपा प्रमुख मायावती ने कांग्रेस की संविधान दिवस रैली को राजनीतिक छल बताया। मायावती ने दिल्ली चुनाव में मतदाताओं से इन दोनों दलों व भाजपा से सावधान रहने की अपील भी की है। रविवार को अमृतसर के हेरिटेज स्ट्रीट पर स्थापित डॉ. भीमराव आंबेडकर की प्रतिमा को अराजकतत्वों ने क्षतिग्रस्त करने और आग लगाने का प्रयास किया था। घटना को लेकर सोमवार को बहुजन समाज पार्टी की प्रमुख मायावती ने इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर पांच पोस्ट कीं। पोस्ट में मायावती ने लिखा कि आम आदमी पार्टी सरकार की लापरवाही से गणतंत्र दिवस के दिन संविधान निमार्ता की प्रतिमा का अनादर हुआ।

मासिक शिवरात्रि पर भोले बाबा का हुआ महाकाल के रूप में महाश्रृंगार, भजन संध्या में झूमे भक्त

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। सोमवार को प्रत्येक मासिक शिवरात्रि के क्रम में इस मासिक शिवरात्रि पर नगर के झारखंड महादेव शिवाला मंदिर पर भक्तों द्वारा बाबा भोलेनाथ की शिवलिंग का महा श्रृंगार किया गया, जिसमें उज्जैन से आए पंडितों द्वारा सजाई गई शिवलिंग बाबा महाकाल के रूप में नजर आई वही बाबा महाकाल का 56 भोग लगाया गया तथा बाबा महाकाल के दर्शन करने के लिए सैकड़ो की संख्या में भक्तों ने अपनी हाजिरी लगाई उधर शिवाला प्रांगण में भजन संध्या का भी आयोजन किया गया जिसमें मुरादाबाद से आई भजन गायिका रानी भारद्वाज गजरौला से मिंटू मस्ताना तथा स्थानीय भजन गायक राहुल दीवाना, सौरभ मित्तल, योगिता सक्सेना आदि ने भोले बाबा के एक से बढ़कर एक भजन सुनाए जिन्हें सुनकर भक्ति भाव विभोर हो गए भजन संध्या का कार्यक्रम देर रात तक चला तथा कार्यक्रम समाप्ति पर महा आरती की गई वह प्रसाद का वितरण किया गया, कार्यक्रम का आयोजन झारखंड महादेव शिवाला मंदिर कमेटी वह शिव सेवा समिति झारखंड महादेव शिवाला मंदिर हसनपुर द्वारा आयोजित कराया गया ,इस मौके पर मुख्य रूप से वेद प्रकाश यादव, पंडित सतबीर गिरी, देवेंद्र शर्मा, महेश शर्मा, पप्पू गिरी, संजीव शर्मा, दामोदर शर्मा, ध्रुव जयसवाल, राजेंद्र यादव, रवि यादव, विकास यादव, गीता यादव, कविता यादव, सीमा यादव, प्रमोद अग्रवाल, अंकुर अग्रवाल, मुकेश गोयल, मनोज गोयल, मयंक अग्रवाल, प्रवीण अग्रवाल, राजीव गुप्ता, प्रदीप अग्रवाल आदि सहित भारी संख्या में भक्तगण मौजूद रहे।

अंबेडकर विकास मंच द्वारा अंबेडकर पार्क पर किया गया ध्वजारोहण

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। रविवार को अंबेडकर विकास मंच द्वारा नगर के अंबेडकर पार्क पर गणतंत्र दिवस के मौके पर ध्वजारोहण किया गया बताते चलें कि अंबेडकर विकास मंच द्वारा अंबेडकर पार्क पर किए गए ध्वजारोहण में मुख्य अतिथि के तौर पर भाजपा नेता हेम सिंह आर्य द्वारा ध्वजारोहण किया गया तथा उपस्थित लोगों ने राष्ट्रगान भी गया, ध्वजारोहण कार्यक्रम में पालिका अध्यक्ष राजपाल सैनी एवं अधिशासी अधिकारी विजयपाल सिंह मुख्य रूप से सम्मिलित हुए, वही अंबेडकर विकास मंच के सभी कार्यकताओं द्वारा बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जी की मूर्ति का माल्यार्पण किया गया, इस मौके पर मुख्य रूप महेंद्र सिंह आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष अंबेडकर विकास मंच, सुशील भगत जी, चंचल सागर, ललिता रानी ग्राम प्रधान, मीनाक्षी रानी, संजय एडवोकेट, लकी कुमार, डॉ अनिल कुमार, ब्रजकिशोर उर्फ बिरजू ,मास्टर ब्रह्मज्ञान, जगबीर मौर्य, अतर सिंह, रामपाल सिंह, जगदीश कपड़े वाले, नवल कुमार, राजेंद्र कुमार गुड्डू, आसाराम, साजिद खान, बदर कुरैशी, उमेश कुमार, मुखिया मास्टर, गोपी मास्टर, बबलू ,मुकेश मुखिया, विजय गौतम ,भीमा, मूलचंद ,रजत कुमार, विवेक कुमार, अजय कुमार, विक्रांत उर्फ बिट्टू, सोनू कुमार, मयंक प्रताप, गुड्डू ,संजीव कुमार आदि कार्यकर्ता व पदाधिकारी उपस्थित रहे।

ठगी पीड़ित जमा करता परिवार एवं किसान मजदूर यूनियन ने कमिश्नर एवं मुरादाबाद डीएम को सौपा ज्ञापन

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

मुरादाबाद /अमरोहा। सोमवार को मुरादाबाद में ठगी पीड़ित जमा करता परिवार संगठन एवं किसान मजदूर यूनियन के बैनर तले एक दिवसीय धरना प्रदर्शन कर 3 सूत्रीय मांगों को लेकर कमिश्नर ओंजनय कुमार व डी एम मुरादाबाद को एक ज्ञापन सौंपा गया ज्ञापन के माध्यम से अवगत कराया कि ठग कंपनियों की समस्त चल अचल सम्पत्ति नीलाम कर सरकार द्वारा बनाए गए बडस एक्ट 2019 कानून के तहत गरीब निवेशकों का भुगतान 180 कार्य दिवस में किया जाना चाहिए

2- भुगतान नहीं होने के कारण ऐजेंटों को निवेशक परेशान कर रहे हैं जिसके कारण ऐजेंटों के खिलाफ निवेशक झूठे मुकदमे दर्ज करा रहे हैं और दबाव में ऐजेंट आत्महत्या तक कर रहे हैं जबकि ऐजेंटों की खुद की जमा पूंजी इन कंपनियों में फंसी हुई हैं, निवेशकों से लेकर पैसा कंपनियों में जमा किया है और कुछ कंपनियों जैसे पर्ल ,सहारा का आधा अधुरा भुगतान सरकारी संस्थाओं सेबी द्वारा किया भी जा रहा है ऐसे में बेकसूर ऐजेंटों की सुरक्षा, सम्मान, रोजगार भारत सरकार के द्वारा किया जाना चाहिए।

3- सरकार द्वारा बनाए गए नए अधिनियम धारा 111 के तहत कंपनी के संचालकों के खिलाफ कार्रवाई कर मृत्यू दण्ड दिया जाना चाहिए जिससे हमारा देश ठग मुक्त भारत देश बन सके। इस मौके पर मुख्य रूप से मनोज कुमार प्रदेश सचिव तप जप संगठन, डा मुन्ना प्रदेश सचिव, शशि चौहान प्रदेश सदस्य,डा वीर सिंह,डा हनीफ , मुकेश कुमार, प्रेम सिह, ठाकुर रामवीर राष्ट्रीय अध्यक्ष किसान मजदूर यूनियन, ओमप्रकाश , बलवीर सिंह, राकेश सिंह, रामगोपाल आदि सहित दर्जनों पदाधिकारी मौजूद रहे ।

उत्तर प्रदेश में आए 65 करोड़ पर्यटक

उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग ने वर्ष 2024 के जारी किए आंकड़े

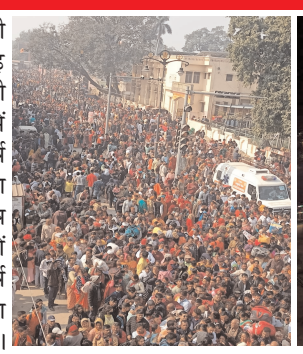

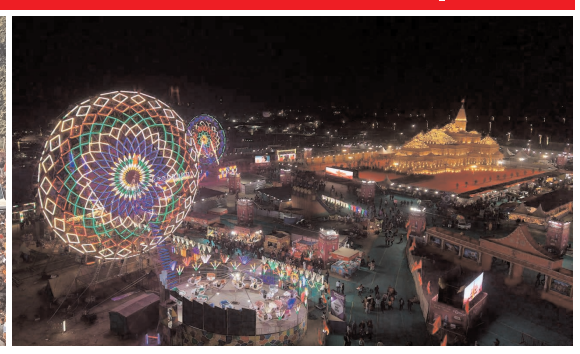

लखनऊ: 27 जनवरी: 'योगी के यूपी' की लोकप्रियता पर्यटकों के बीच निरंतर बढ़ रही है। उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग के जारी आंकड़े इस बात के प्रमाण हैं। राज्य में आने वाले पर्यटकों की संख्या में वर्ष 2023 की तुलना में वर्ष 2024 में लगभग 17 करोड़ की वृद्धि दर्ज की गई है। विशेष बात यह है कि देश के साथ-साथ विदेशों में भी यूपी का आकर्षण बढ़ा है। एक वर्ष में विदेशी पर्यटकों की संख्या में लगभग 07 लाख की बढ़ोतरी देखने को मिली है। योगी सरकार के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि उत्तर प्रदेश में पर्यटन की असीम संभावनाएं हैं। इसे धरातल पर उतारने के लिए निरंतर प्रयत्न किए जा रहे हैं। वर्ष 2022 से राज्य घरेलू पर्यटकों की पहली पसंद बना हुआ है। विदेशी पर्यटकों के आगमन भी यह उपलब्धि हासिल की प्राथमिकता है।

एक वर्ष में लगभग 17 करोड़ पर्यटकों की हुई वृद्धि

पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह के मुताबिक उत्तर प्रदेश में वर्ष 2024 में कुल 64,90,76,213 पर्यटक आए, जबकि 2023 में कुल 48,01,27,191 पर्यटकों का आना हुआ था। इस प्रकार एक वर्ष में कुल 16,89,49,022 की वृद्धि हुई। बीते वर्ष 22,69,067 विदेशी पर्यटक आए थे, जबकि 2023 में 16,01,503 विदेशी पर्यटक थे। इस प्रकार एक वर्ष में विदेशी पर्यटकों की संख्या में लगभग 6,67,564 की वृद्धि दर्ज की गई है।

अयोध्या-काशी, मथुरा-प्रयागराज में भी हुई अभूतपूर्व वृद्धि

पर्यटन मंत्री ने बताया कि श्रीराम जन्मभूमि में श्री रामलला के विराजमान होने के बाद अयोध्या में पर्यटकों की संख्या में तेज गति से वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 2024 में वहां कुल 16,44,19,522 श्रद्धालु पहुंचे, जबकि वर्ष 2023 में यह संख्या 5,75,70,896 थी। इस प्रकार एक वर्ष में 10,68,48,626 की वृद्धि हुई है। काशी में वर्ष 2024 में 110097743 श्रद्धालु आए, जबकि 2023 में कुल 101867618 श्रद्धालु पहुंचे थे। इस प्रकार पर्यटकों की संख्या में 82,30,125 की वृद्धि दर्ज हुई है। मथुरा में इस वर्ष 90081788 श्रद्धालु पहुंचे, जबकि वर्ष 2023 में 77927299 श्रद्धालु पहुंचे थे। इस प्रकार 1,21,54,489 की वृद्धि हुई है। प्रयागराज में वर्ष 2024 में 51262806 पर्यटक आए, जबकि वर्ष 2023 में 50671622 पर्यटक पहुंचे थे। इस प्रकार 591,184 पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हुई।

आगरा में आए सर्वाधिक विदेशी पर्यटक

विदेशी पर्यटकों के आगमन में वर्ष 2024 में आगरा पहले स्थान पर रहा। यहां कुल 1,77,75,561 पर्यटक आए, जिसमें 14,65,814 विदेशी पर्यटक थे। वाराणसी में कुल 110097743 श्रद्धालु आए, जिसमें 309932 पर्यटक विदेशी थे। इसी प्रकार, कुशीनगर में कुल 2242913 पर्यटक आए, जिसमें 2,51,251 विदेशी पर्यटक पहुंचे। कृष्ण नगरी मथुरा में वर्ष 2024 में कुल 90081788 श्रद्धालु आए, जिसमें 136079 विदेशी पर्यटक थे। अयोध्या में कुल 16,44,19,522 श्रद्धालु पहुंचे, जिसमें 26,048 विदेशी पर्यटक हैं।

मौनी अमावस्या के महापर्व पर प्रयागराज रेल मण्डल के स्टेशनों पर लागू होगी विशेष व्यवस्था

27 जनवरी, महाकुम्भ नगर। महापर्व महाकुम्भ का दिव्य-भव्य आयोजन प्रयागराज में संगम तट पर हो रहा है। महाकुम्भ में त्रिवेणी संगम में पवित्र स्नान करने प्रति दिन लाखों, करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु प्रयागराज आ रहे हैं। महाकुम्भ में अब तक 13 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालु संगम में स्नान कर चुके हैं। आगमी 29 जनवरी को महाकुम्भ के सबसे बड़े अमृत स्नान मौनी अमावस्या की तैयारी हो रही है। मौनी अमावस्या के पर्व पर 10 करोड़ श्रद्धालुओं के आने का अनुमान है। श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या को देखते हुए प्रयागराज रेल मण्डल ने भी विशेष प्रबंध किये हैं। मौनी अमावस्या पर्व के दिन प्रयागराज रेल मण्डल ने शहर के सभी स्टेशनों पर यात्रियों के आने और जाने के लिए विशेष योजना बनाई है।

प्रयागराज जंक्शन पर प्रवेश और निकास की विशेष व्यवस्था

मौनी अमावस्या के अमृत स्नान पर लगभग 10 करोड़ लोगों के प्रयागराज आने का अनुमान व्यक्त किया जा रहा है। 25 जनवरी से ही लगभग 1 करोड़ यात्री प्रतिदिन महाकुम्भ में आने लगे हैं। इतनी भारी संख्या में आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा और उनकी सुगम निकासी के लिए प्रयागराज रेल मण्डल ने शहर के सभी स्टेशनों के लिए विशेष योजना और कुछ प्रतिबंध लागू किये हैं। ये प्रतिबंध मौनी अमावस्या के स्नान पर्व के एक दिन पहले और दो दिन बाद तक लागू रहेंगे। मौनी अमावस्या के स्नान पर्व के दिन प्रयागराज जंक्शन पर प्रवेश केवल सिटी साइड, प्लेटफॉर्म नं.-1 की ओर से दिया जाएगा। निकास केवल सिविल लाइंस साइड, प्लेटफार्म न. 6 की ओर से होगा। आरक्षित यात्रियों, जिनका पहले से टिकट रिजर्व है उन्हें सिटी साइड के गेट नंबर 5 से अलग से प्रवेश दिया जाएगा। जबकि अनारक्षित यात्रियों को दिशावार कलर कोडेड आश्रय स्थलों के माध्यम से प्रवेश कराया जाएगा। टिकट के लिए आश्रय स्थलों में ही अनारक्षित टिकट काउंटर, ए.टी.वी.एम और मोबाइल टिकटिंग की व्यवस्था रहेगी। भीड़ के अतिरिक्त दबाव का प्रबंधन करने के लिए खुसरो बाग में 1 लाख लोगों के ठहरने के लिए होल्डिंग एरिया का निर्माण किया गया है।

नैनी, छिवकी, सूबेदारगंज स्टेशनों के लिए विशेष कार्य योजना

मौनी अमावस्या पर्व पर नैनी जंक्शन में प्रवेश केवल स्टेशन रोड से और निकास केवल मालगोदाम की ओर से होगा। आरक्षित यात्रियों को गेट नंबर 2 से अलग से प्रवेश दिया जाएगा। वहीं प्रयागराज छिवकी स्टेशन पर प्रवेश केवल प्रयागराज-मिजार्पुर राजमार्ग को जोड़ने वाले सीओडी मार्ग से और निकास केवल जी.ई. सी नैनी रोड की ओर से होगा। आरक्षित यात्री गेट नंबर 2 से प्रवेश करेंगे। सूबेदारगंज स्टेशन में प्रवेश झलवा, कौशाम्बी रोड की ओर से होगा जबकि निकास केवल जी.टी. रोड की ओर होगा। आरक्षित यात्री गेट नंबर 3 से प्रवेश करेंग। अनारक्षित यात्रियों के लिए सभी स्टेशनों पर दिशावार कलर कोडेड आश्रय स्थल बनाये गये हैं। जहां से यात्रियों को उनके जाने के गंतव्य स्टेशन के मुताबिक आश्रय स्थलों में अलग-अलग कलर के टिकट के हिसाब से प्लेटफार्म में पहुंचाया जाएगा। जहां से नियमित और मेला स्पेशल ट्रेनों से यात्रियों को उनके गंतव्य स्टेशनों तक पहुचांया जाएगा।

आदर्श नगर पालिका हसनपुर में धूमधाम से मनाया गया गणतंत्र दिवस का त्यौहार

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। रविवार को आदर्श नगर पालिका परिषद हसनपुर के प्रांगण में 76 वां गणतंत्र दिवस बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया गया, सर्वप्रथम पालिका अध्यक्ष राजपाल सैनी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया इसके बाद राष्ट्रीय गान हुआ, वही अंबेडकर पार्क पर पालिका अध्यक्ष राजपाल सैनी एवं अधिशासी अधिकारी विजयपाल सिंह ने डॉ भीमराव अंबेडकर की मूर्ति पर माल्या अर्पण किया उसके बाद शहीद भगत सिंह जी की मूर्ति पर भी माल्यार्पण किया गया, पालिका अध्यक्ष राजपाल सैनी एवं अधिशासी अधिकारी विजयपाल सिंह ने सभी नगर वासियों को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं दी, इस मौके पर अधिशासी अधिकारी विजयपाल सिंह ने देश भक्ति भरा एक गीत भी गया जिसे सुनकर सभी ने जमकर तालियां बजाई, वही कार्यक्रम में स्कूली बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए, उपस्थित अतिथियों ने बच्चों को पुरस्कार दिए, इस मौके पर मुख्य रूप से पालिका अध्यक्ष राजपाल सैनी, अधिशासी अधिकारी विजयपाल सिंह, नगर स्वच्छता प्रेरक प्रशांत सैनी, सभासद मुन्ना चौहान, शाहनवाज अंसारी, शुभम अग्रवाल, हम्जा अली, मोहनीश लोधी , नितिन सैनी, राहुल सैनी, राजपाल सैनी, अलीमुद्दीन, बदर कुरैशी, एडवोकेट रविशंकर शर्मा, इशांत सैनी, बाबू करण सिंह, बाबू दिनेश कुमार आदि सहित गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

गृहमंत्री अमित शाह और मुख्यमंत्री योगी ने किया अक्षयवट का दर्शन

महाकुम्भनगर, 27 जनवरी। गृहमंत्री अमित शाह और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महाकुम्भनगर में अक्षयवट का दर्शन किया। मुख्यमंत्री ने गृहमंत्री की अगवानी की, जिसके बाद मुख्य पुजारी ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पूजा-अर्चना कराई। गृहमंत्री अमित शाह ने अक्षयवट की आरती उतारी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ पुष्प अर्पित किए।

अक्षय वट की परिक्रमा

संत समाज के साथ गृहमंत्री और मुख्यमंत्री ने अक्षयवट की परिक्रमा की और महाकुम्भ की

तैयारियों पर चर्चा की। अमित शाह ने अपने परिवार के साथ अक्षयवट की पूजा की। जिसमें उनकी पत्नी सोनल शाह, बेटे जय शाह, बहू और पोतियां भी शामिल थीं। पूजा के बाद शाह परिवार ने वृक्ष के सामने खड़े होकर ग्रुप फोटो भी खिंचवाई। इस अवसर पर अक्षयवट के नीचे संतों के साथ मिलकर महाकुम्भ की तैयारियों को लेकर विचार-विमर्श भी किया गया।

गणतंत्र दिवस पर विभिन्न विद्यालयों में तिरंगा झंडा फहराया गया

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। रविवार को नगर के विभिन्न विद्यालयों में गणतंत्र दिवस के मौके पर ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित किए गए, बताते चलें कि नगर के रामशरन सुशीला आनंद हाई स्कूल में विद्यालय के अध्यक्ष रवि शंकर शर्मा एवं प्रबंधक सुशील चंद्र सक्सेना द्वारा ध्वजारोहण किया गया वहीं नगर के एच एस एस पब्लिक स्कूल में कमलेश अग्रवाल एवं मैनेजमेंट कमेटी द्वारा ध्वजारोहण किया गया, वहीं चिरंजीलाल कॉलेज ऑफ एजुकेशन डगरोली में विद्यालय के निदेशक पुनीत अग्रवाल एवं प्रबंधिका अनुभा अग्रवाल द्वारा ध्वजारोहण किया गया, वहीं नगर के एसपीएस पब्लिक स्कूल में प्रबंधक विनोद कुमार ने ध्वजारोहण किया, सुनील कुमार इंटरनेशनल अकैडमी में निदेशक

गोपाल सक्सेना ने ध्वजारोहण किया, श्रीमती सुखदेवी इंटर कॉलेज, बाबा सीताराम विद्यालय शिवाला रोड, चामुंडा मंदिर के निकट अनस पब्लिक स्कूल, एवं नगर के विभिन्न विद्यालयों में ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया तथा कार्यक्रम समाप्ति पर सभी को मिष्ठान वितरण किया गया।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने स्वच्छता नायकों के साथ मनाया जन्मदिन

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी अपना जन्मदिन चंडीगढ़ में राजकीय बौद्धिक विकलांग पुनर्वास संस्थान के बच्चों के साथ मनाते हुए।

चंडीगढ़, जनवरी : हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने अपना जन्मदिन मुख्यमंत्री आवास संत कबीर कुटीर में स्वच्छता नायकों के साथ बड़ी सादगी से मनाया। इस अवसर पर स्वच्छता नायकों ने मुख्यमंत्री को स्मृति चिन्ह भेंट कर उन्हें बधाई व शुभकामनाएं देते हुए उनकी दीघार्यु की कामना की। मुख्यमंत्री ने उन्हें सम्मानित किया और उनके साथ नाश्ता भी किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे सफाई कर्मचारी स्वच्छता के प्रहरी हैं और उनके सहयोग के बिना प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य साकार नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि स्वच्छता नायक ही सही मायनों में कड़ी मेहनत कर लोगों को स्वच्छता का संदेश देते हैं। हरियाणा सरकार ने भी स्वच्छता नायकों के हितों के लिए हरियाणा राज्य सफाई कर्मचारी आयोग का गठन किया है, जो समय-समय पर कर्मचारियों के हितों व उनके बच्चों के कल्याणकारी निर्णयों के बारे सरकार के संज्ञान में लाते हैं। इसके उपरांत मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी चंडीगढ़ के सैक्टर-31 स्थित राजकीय बौद्धिक विकलांग पुनर्वास संस्थान पहुंचे और संस्थान के बच्चों के साथ अपना जन्मदिन मनाया। मुख्यमंत्री ने संस्थान के बच्चों द्वारा किये जा रहे कार्यों का अवलोकन भी किया और उनके कार्यों की सराहना की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने बच्चों को उपहार भी वितरित किए।

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री सहित बड़ी राजनीतिक हस्तियों ने हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को उनके जन्मदिन पर दी बधाई

चंडीगढ़, जनवरी : भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को उनके जन्मदिन पर शुभकामनाएं दी हैं। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए उन्हें एक जमीनी नेता के साथ-साथ कर्मशील भी बताया। प्रधानमंत्री ने कहा कि सैनी ने खुद को समाज सेवा में समर्पित किया हुआ है और हरियाणा की तरक्की और उन्नति के लिए अनेक प्रयासों को क्रियान्वित कर रहे हैं। हरियाणा के राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय और पंजाब के राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया ने भी मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को जन्मदिन की बधाई दी। इसके अलावा केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भी मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को उनके जन्मदिन पर बधाई देते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में हरियाणा विकास के पथ पर अग्रसर है। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी को उनके जन्मदिन पर शुभकामनाएं देते हुए कहा ईश्वर आपको उत्तम स्वास्थ्य और मंगलमय जीवन प्रदान करे। केंद्रीय रक्षामंत्री राजनाथ सिंह, भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री जगत प्रकाश नड्डा ने भी मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को जन्मदिन की बधाई दी। केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल ने भी मुख्यमंत्री को जन्मदिन की बधाई देते हुए कहा कि आप प्रदेश को नित नई ऊंचाइयों पर लेकर जाएं। इसके अलावा, लोकसभा स्पीकर श्री ओम बिरला और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी मुख्यमंत्री को उनके जन्मदिन पर शुभकामनाएं दी। प्रदेश के कोने-कोने से आज मुख्यमंत्री आवास संत कबीर कुटीर पर आए नागरिकों ने भी मुख्यमंत्री को जन्मदिन पर बधाई व शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए उनका धन्यवाद भी किया।

आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल में स्वतंत्रता सेनानी अनंता सिंह की मनाई पुण्यतिथि

विजेता छात्रों को सम्मानित करते प्रधान एडवोकेट रणदीप आर्य। (मोहन लाल)

पानीपत जनवरी : आर्य बाल भारती विद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी अनंता सिंह की पुण्यतिथि श्रद्धा के साथ मनाई गई । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विद्यालय के प्रधान एडवोकेट रणदीप आर्य रहे जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व उप - प्राचार्य अचार्य राजकुमार शर्मा मौजूद रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. अशोक आर्य ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ गायत्री मंत्र के साथ हुआ। वहीं विद्यालय के प्रतिभाशाली छात्रों को सम्मानित भी किया गया। जिसमें विद्यालय की कक्षा पांचवी की छात्रा प्रियांशी ने जूडो कराटे फेडरेशन में नेशनल गोल्ड जीतने पर तथा कक्षा 5वी की छात्र राधिका ने आइस कलरिंग में नेशनल गोल्ड मेडल जीतकर हरियाणा का नाम रोशन किया। छात्रों को मुख्य अतिथि ने मौके पर ही सम्मानित किया। समारोह को संबोधित करते हुए प्रधान रणदीप आर्य ने कहा कि खेलों से जहां तन मन स्वस्थ और सुखी रहता है वही बच्चों में नेतृत्व करने की भावना भी जागृत होती है। उन्होंने अध्यापकों से अनुरोध किया कि अब परीक्षाएं अधिक दूर नहीं है इसलिए छात्रों की अतिरिक्त कक्षा लगाकर उन्हें गणित,विज्ञान.संस्कृत और अंग्रेजी जैसे कठिन विषयों में परिपक्व बनाने का कार्य भी करें।

प्रभातफेरी में शिव भजनों पर झूमे श्रद्धालु

प्रभातफेरी का स्वागत करते श्रद्धालु।

करनाल, जनवरी : श्री सनातन धर्म शिव मंदिर सभा पुराना सराफा बाजार करनाल की ओर से 26 फरवरी को महाशिवरात्रि के दिन शहर में विशाल एवं भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी। यह शोभायात्रा रामलीला मैदान से शुरू होगी और मुख्य मार्गो से होते हुए शिव मंदिर सराफा बाजार में विश्राम लेगी। मंदिर सभा की ओर से महाशिवरात्रि पर्व की तैयारियां जोर शोर से की जा रही हैं। इसी उपलक्ष्य में प्रतिदिन प्रभातफेरी निकाली जा रही हैं। शनिवार को प्रभातफेरी ने कर्ण विहार व सेक्टर पांच की परिक्रमा की। ढोल की थाप पर नाचते हुए श्रद्धालु पालकी के साथ-साथ चल रहे थे। प्रधान रमेश जिंदल ने बताया कि 26 जनवरी को प्रभातफेरी सेक्टर सात में निकाली जाएगी। इस अवसर पर अमरजीत मित्तल, सोनू, जयभगवान, बी.बी. गुप्ता, रत्न गुप्ता, श्याम, सुनील, संजय गोयल, अशोक, प्रवीण, हुकमा, उषा, निशा, पूनम, रोशनी, ओमप्रकाश, सुशील, मधु व आयशा मौजूद रहे।

राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर-44 से गुजरने वाले वाहनों पर नजर रखने हेतु हरियाणा पुलिस की 'थर्ड आई' हुई एक्टिवेट

राजमार्ग के 19 स्थानों पर इंस्टॉल किए गए 128 सीसीटीवी कैमरे, डीजीपी शत्रुजीत कपूर ने करनाल स्थित सीसीटीवी नियंत्रण कक्ष से किया उद्घाटन

यातायात नियमों की उल्लंघना करने वाले वाहन चालकों के किए जाएंगे ऑनलाइन चालान, आपराधिक गतिविधियों पर भी रहेगी नजर

चंडीगढ़, जनवरी : हरियाणा पुलिस की उपलब्धियों में आज एक और अध्याय जुड़ा है। सड़क सुरक्षा एवं अपराध नियत्रंण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ाते हुए आज पुलिस महानिदेशक शत्रुजीत कपूर द्वारा करनाल स्थित सीसीटीवी नियंत्रण कक्ष से राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर-44 (अंबाला बॉर्डर से लेकर सोनीपत के कुंडली बॉर्डर तक) पर लगाए गए 128 सीसीटीवी कैमरों को शुरू किया गया। अब इस राजमार्ग से गुजरने वाले सभी वाहनों पर हरियाणा पुलिस की कड़ी नजर रहेगी और यातायात नियमों की उल्लंघना करने वाले वाहन चालकों के ऑटोमैटिक तरीके से चालान किए जाएंगे। यह सीसीटीवी नियंत्रण कक्ष अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, यातायात एवं राजमार्ग कार्यालय में स्थापित किया गया है। इस बारे में जानकारी देते हुए पुलिस महानिदेशक शत्रुजीत कपूर ने बताया कि सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने तथा यातायात नियमों की पालना सुनिश्चित करने के उद्देश्य से हरियाणा पुलिस द्वारा यह ऐतिहासिक पहल शुरू की गई है। हरियाणा पुलिस द्वारा इस राजमार्ग के 19 स्थानों पर 128 सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। इनमें से 9 स्थानों पर ऑटोमेटिक नंबर प्लैट रिकॉगनिशन (एएनपीआर) कैमरे तथा 10 स्थानों पर सर्विलांस कैमरे लगाए गए हैं। उन्होंने बताया कि एएनपीआर कैमरों को हरियाणा पुलिस के इंटेलिजेंट टैजफिक मैनेजमैंट सिस्टम से जोड़ा गया है ताकि वाहनो का पूरा इतिहास प्राप्त किया जा सके।

कपूर ने बताया कि एनएच-44 पर 72 एएनपीआर, 38 सर्विलांस तथा 18 एविडेंस कैमरे लगाए गए हैं। ये कैमरे अत्याधुनिक तकनीक से लैस हैं। इन कैमरों के शुरू होने से यहां से गुजरने वाले वाहन चालकों में सुरक्षा की भावना को भी बल मिलेगा क्योंकि कैमरों के माध्यम से आपराधिक गतिविधियों में शामिल वाहनों, चोरी किए गए वाहनों आदि के बारे में अलर्ट नियंत्रण कक्ष में स्वतः ही पहुंच जाएगा जिसकी सूचना आवश्यकतानुसार पुलिस थानों में भी भेजी जाएगी। कपूर ने बताया हरियाणा प्रदेश में अब तक 10 जिलों में इस प्रकार के कैमरे इंस्टॉल किए गए हैं जिनमें यमुनानगर, कुरूक्षेत्र, करनाल, अंबाला, पानीपत, रोहतक, पंचकूला, गुरूग्राम, फरीदाबाद तथा सोनीपत शामिल हैं। इसके अलावा गुरुग्राम जिला में ड्रोन के माध्यम से भी चालान किए जाते हैं ताकि यातायात नियमों की पालना सुनिश्चित की जा सके।

गौरतलब है कि वर्ष-2023 की अपेक्षा वर्ष-2024 में सड़क हादसों में 657 की कमी दर्ज की गई है। इसके साथ ही, वर्ष 2023 की तुलना में वर्ष 2024 में सड़क दुर्घटनाओं में 279 कम लोगों की मृत्यु हुई है तथा 432 लोग कम घायल हुए हैं। घातक सड़क दुर्घटनाओं के मामलो में भी कमी देखी गई है, वर्ष 2023 में जहां कुल 4652 मामले सामने आए थे वही इस वर्ष ये घटकर 4389 रह गए है जो पिछले वर्ष की तुलना में 5.65 प्रतिशत कम हैं। वर्ष-2024 में हरियाणा पुलिस द्वारा सड़क सुरक्षा के 2366 जागरूकता अभियान चलाए गए जिनके माध्यम से 3 लाख 16 हजार 414 बच्चों व अन्य लोगों को जागरूक किया गया। इसी प्रकार हरियाणा पुलिस द्वारा प्रदेश में लेन ड्राइविंग की पालना सुनिश्चित करने के लिए समय समय पर अभियान चलाए जाते हैं जिसके तहत लेन ड्राइविंग नियमों की उल्लंघना करने वाले 3,86,266 वाहन चालकों के चालान किए गए हैं।

सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्तियों को 1.5 लाख रुपए तक के कैशलैस ईलाज की सुविधा

सड़क सुरक्षा संबंधी विषय पर जानकारी देते हुए कपूर ने बताया कि सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जारी दिशा-निर्देर्शों की पालना में हरियाणा पुलिस द्वारा एक नई पहल शुरू की गई है जिसके तहत अब सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति का शुरुआती गोल्डन आवर में निःशुल्क इलाज करवाया जा रहा है। इस योजना के तहत दुर्घटना की तिथि से अधिकतम 7 दिनों की अवधि के लिए प्रत्येक सड़क दुर्घटना के लिए प्रति व्यक्ति 1.5 लाख रुपए तक का उपचार निःशुल्क किया जाता है। उन्होंने बताया कि यह पायलेट प्रोजैक्ट नैशनल हैल्थ अथॉरिटी द्वारा स्थानीय पुलिस व राज्य स्वास्थ्य विभाग द्वारा अनुर्बंधित अस्पतालों जैसे-प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र(पीएचसी), सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र(सीएचसी), नागरिक अस्पताल तथा कई अन्य निजी अस्पतालों के साथ तालमेल स्थापित करते हुए संयुक्त रूप से लागू किया गया है। उन्होंने बताया कि इस योजना के तहत सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को अस्पताल ले जाया जाता है। इसके बाद अस्पताल प्रबंधन द्वारा अपने यहां साफटवेयर में घायल व्यक्ति का डेटा अपलोड करके संबंधित पुलिस थाने में भेजा जाता है जिसके बाद संबंधित पुलिस थाने द्वारा 6 घंटे के भीतर पुष्टि की जाती है कि घायल व्यक्ति सड़क दुर्घटना में घायल हुआ है अथवा नही। पुष्टि होने के उपरांत घायल व्यक्ति को कैशलैस ईलाज की सुविधा दी जाती है।

डीजीपी की अपील

कपूर ने आमजन से अपील करते कहा कि सड़क सुरक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है। आमजन को सड़कों को सुरक्षित बनाने में अपना सहयोग देना चाहिए और वाहनों को निर्धारित गति सीमा में ही चलाना चाहिए। हरियाणा पुलिस द्वारा आमजन को यातायात नियमों के बारे में जागरूक करने के लिए अनेक प्रकार की प्रतियोगिताएं व गतिविधियां आयोजित की जा रही है, लोग उसमें भागीदारी सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि वाहन चलाते समय लोग मोबाइल फोन आदि का भी इस्तेमाल ना करें। व्यक्ति की जरा सी लापरवाही ना केवल उनके स्वयं के लिए बल्कि दूसरे व्यक्तियों के लिए भी जानलेवा साबित हो सकती है।

नए एसीपी का एसोसिएशन ने किया स्वागत

एसीपी मलकीत सिंह को बुके भेंट करते एसोसिएशन के पदाधिकारी।

गन्नौर जनवरी : एमएसएमई औद्योगिक वेलफेयर एसोसिएशन बड़ी के पदाधिकारियों ने नवनियुक्त एसीपी मलकीत सिंह का बुके भेंट कर स्वागत किया। एसोसिएशन के प्रधान नवीन कौशिक व महासचिव हरप्रीत सिंह ने एसीपी को हर संभव मदद करने का भी आश्वासन दिया। इस दौरान एसीपी ने भी उद्योगपतियों का आश्वासन दिया कि पुलिस की तरफ से उद्योगपतियों व श्रमिकों की सुरक्षा में किसी तरह की कोताही नहीं बरती जाएगी। इस मौके पर हरीश शर्मा, अमित त्यागी, सुरेंद्र सिंह आदि मौजूद रहे।

मानवीय आधार के साथ समाज सेवा में रोटरी क्लब की भूमिका अतुलनीय : राज्यपाल

राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने फरीदाबाद में रोटरी क्लब के तत्वावधान में चल रही सेवा का लिया जायजा

चंडीगढ़, जनवरी : हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने कहा कि मानवीय आधार पर जनसेवा को समर्पित होकर कार्य कर रहा रोटरी क्लब समाज में अतुलनीय भूमिका अदा कर रहा है। सामाजिक पहलू को सामने रखते हुए की जा रही सेवा के लिए वे रोटरी क्लब की पूरी टीम को बधाई देते हैं। राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय शनिवार को फरीदाबाद में रोटरी ब्लड बैंक चैरिटेबल क्लब की ओर से आयोजित सम्मान कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। राज्यपाल ने दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इससे पूर्व राज्यपाल ने रोटरी ब्लड बैंक का भी दौरा करते हुए वहां की व्यवस्थाओं का जायजा लिया और सैंटर में थैलेसीमिया पीड़ित बच्चों व उनके अभिभावकों से बातचीत भी की। राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने कहा कि पूरे विश्व में थैलेसीमिया बीमारी से 13 लाख से ज्यादा पीड़ित लोग हैं। वहीं देश में थैलेसीमिया से ग्रस्त लोगों की संख्या एक लाख से अधिक है और हर साल करीब 15000 बच्चे इस बीमारी से ग्रस्त जन्म लेते हैं, जोकि चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि हमें जागरूकता अभियान चलाकर थैलेसीमिया से बचाव को लेकर लोगों को जागरूक करना चाहिए। राज्यपाल श्री दत्तात्रेय ने कार्यक्रम में संबोधित करते हुए कहा कि थैलेसीमिया एक गंभीर बीमारी है, जो कि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में होती रहती है। इससे पीड़ित बच्चों को ब्लड उपलब्ध करवाकर रोटरी ब्लड बैंक चैरिटेबल क्लब सराहनीय कार्य कर रहा है। इस क्लब के समस्त स्टाफ सदस्य निस्वार्थ भाव से पीड़ितों की सेवा कर रहे हैं। फरीदाबाद रोटरी ब्लड बैंक में प्रदेश के साथ-साथ अन्य राज्यों के थैलेसीमिया पीड़ित बच्चे भी रक्त चढ़वाने के लिए आते हैं। उन्होंने कहा कि नर सेवा ही नारायण सेवा है, जिसे रोटरी क्लब के सदस्य बखूबी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि फरीदाबाद रोटरी क्लब के प्रयासों से कॉलेजों, अस्पतालों सहित अन्य जगहों पर रक्तदान शिविर लगाए जाते हैं। इन शिविरों में युवाओं को अधिक से अधिक संख्या में रक्तदान करना चाहिए। राज्यपाल ने कहा कि सभी को अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना चाहिए। इस अवसर पर राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने

रोटरी क्लब के ट्रस्टी सदस्यों को सराहनीय कार्य करने के लिए सम्मानित भी किया। इस अवसर पर डीसी विक्रम सिंह, एडीसी साहिल गुप्ता, एसडीएम बल्लभगढ़ मयंक भारद्वाज, रेडक्रास सोसायटी के वाइस चेयरमैन अंकुश मिगलानी, रोटरी क्लब से प्रेम पसरीजा, महेंद्र महतानी, दीपक प्रसाद, रेडक्रॉस सोसाइटी के सचिव बिजेंद्र सौरोत व रोटरी क्लब के सदस्यगण मौजूद रहे।

हरियाणा सीआईडी मुख्या एडीजीपी सौरभ सिंह को विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक, 8 अन्य को पुलिस पदक

पुलिस महानिदेशक ने समस्त पदक विजेताओं को दी शुभकामनाएं, बढ़ाया मनोबल

सौरभ सिंह

चंडीगढ़, जनवरी : गणतंत्र दिवस के अवसर पर हरियाणा के 1 पुलिस अधिकारी को विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित किया जा रहा है तथा 8 अन्य पुलिसकर्मियों को सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक से अलंकृत किया जाएगा। पदक प्राप्त करने वाले अधिकारियों व जवानों की इस महत्वपूर्ण उपलब्धि पर खुशी जाहिर करते हुए हरियाणा पुलिस महानिदेशक शत्रुजीत कपूर ने कहा कि हरियाणा पुलिस के अधिकारियों व कर्मचारियों के अथक एवं निरंतर प्रयासों को राष्ट्रीय स्तर पर मिली पहचान समस्त पुलिस बल के लिए गौरव का विषय है। उन्होंने कहा कि इस उपलब्धि से पुलिस पदक से अलंकृत होने वाले अधिकारियों के साथ-साथ राज्य पुलिस बल के अन्य अधिकारियों व जवानों का भी मनोबल बढेगा। उन्होंने चयनित अधिकारियों तथा जवानों को बधाई देते हुए भविष्य में भी इसी प्रकार उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया।

ये होंगे सम्मानित

हरियाणा पुलिस के प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि हरियाणा सीआईडी मुख्या एडीजीपी सौरभ सिंह को विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित जाएगा। हरियाणा पुलिस में सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक से सम्मानित होने वाले अधिकारियों में उप-पुलिस अधीक्षक इन्द्रजीत सिंह, गुप्तचर विभाग, गुरूग्राम, निरीक्षक विश्वजीत, गुप्तचर विभाग, चरखी दादरी, निरीक्षक विपिन कुमार, पुलिस अकादमी मधुबन करनाल, उप-निरीक्षक मोहन सिंह, टेलीकॉम पंचकूला हरियाणा, उप-निरक्षक रणबीर स्पेशल टास्क फोर्स करनाल, उप-निरीक्षक ओमप्रकाश सीन ऑफ क्राइम हिसार, उप-निरीक्षक नरेन्द्र कुमार, मुख्यालय गुप्तचर विभाग, सहायक उप-निरीक्षक जगतार सिंह मुख्यमंत्री सुरक्षा डैस्क, गुप्तचर विभाग, हरियाणा शामिल हैं।

इंद्रजीत सिंह

विश्वजीत

विपिन कुमार

मोहन सिंह

रणबीर

ओमप्रकाश

नरेन्द्र कुमार

जगतार सिंह

जिला स्तरीय जूनियर बालक हैण्डबाल, बॉक्सिंग व भारोत्तोलन प्रतियोगिता का शुभारम्भ

■ झांसी

खेल निदेशालय, उ0प्र0 लखनऊ के निर्धारित कार्यक्रम अन्तर्गत मेजर ध्यानचन्द स्पोर्ट्स स्टेडियम क्षेत्रीय खेल कार्यालय मेजर पर आज दिनॉक 24 जनवरी, 2025 को जिला स्तरीय स्तरीय जूनियर बालक हैण्डबाल/बॉक्सिंग/भारोत्तोलन प्रतियोगिता का षुभ आरम्भ अमित कुमार, मुख्य वरिश्ठ प्रबंधक सेन्ट्रल बैक आफ इण्डिया-झॉसी,, एवं विजय निरंजन, पूर्व आई0एस0 अधिकारी भारत सरकार, द्वारा खिलाड़ियो से परिचय प्राप्त कर किया गया इससे पूर्व मुख्य अतिथि व विषिश्ट अतिथि का प्र0 क्षेत्रीय क्रीड़ाधिकारी सुरेष बोनकर प्रतियोगिता प्रभारी राजेष कुमार सोनकर, उप क्रीड़ाधिकारी द्वारा बुके भेंट कर स्वातग किया गया । प्रतियोगिता जनपद की 09 टीमें क्रमष 1-षेरगुड पब्लिक स्कूल, 2- संन इंटरनेषल पब्लिक स्कूल 3- बालाजी पब्लिक स्कूल 4- षिवा कान्वेट इं0 कालेज 5- सिद्वष्वर माउन्ट्रेन पब्लिक स्कूल, 6- राजकीय आश्रम पद्वति इं0 कालेज 7- राजकयी इंटर कालेज, 8-हाफिज सिद्दकी नेषनल इं0कालेज व स्टेडियम टेऊनीज एकादष ने प्रतिभाग किया । प्रतियोगिता में मैचो का विवरण निम्नवत हैः-

पहला मैच सिद्वेष्वर माउनटेन बनाम राजकीय इं0 कालेज के मध्य खेला गया जिसमें राजकीय इं0का0 9-1 से विजयी रही । दुसरा मैच स्टेडियम एकादष ने बनाम राजकीय आश्रम पद्वति के मध्य खेला गया जिसमें स्टेडियम एकादष 10-2 से विजयी रही । तीसरे मैच हाफिज सिदद्की ने षिवा कानवेन्ट को 9-0 से पराजित किया । चौथा मैच संन इंटरनेषनल स्कूल ने बाला जी पब्लिक स्कूल को 2-0 से पराजित किया । पॉचवे मैच में स्टेडियम एकादष ने संन इंटरनेषनल स्कूल 10-4 से पराजित कर फाइनल में प्रवेष किया । छठवे मैच में हफिज सिद्दकी ने षेरबुड कालेज, को 5-3 से पराजित कर फाइनल में प्रवेष किया ।

फाइनल मैच मे स्टेडियम एकादष ने हाफिज सिद्दकी को 7-3 से पराजित कर प्रतियोगिता को अपने नाम किया । उक्त प्रतियोगिता के निर्णायक विकास उपाध्याय, राजेष कुमार दिनेष रजक, सुनेहा कुषवाहा, कु0दिव्याषी चतुर्वेदी, राजा खॉन,सुसंगीता कुषवाहा, मो0 परवेज आदि रहें।

जिला स्तरीय बालक हैण्डबाल प्रतियोगिता के समापन/पुरस्कार वितरण के मुख्य अतिथि षान्तनु गौतम,वरिश्ठ मुख्य प्रबंधक, एस0बी0आई0 एवं विषिश्ट अतिथि संजीव सरावगी, जिला सचिव हैण्डबाल रहे। प्रतियोगिता का संचालन राजेष कुमार सोनकर, उप क्रीड़ाधिकारी -झॉसी द्वारा किया गया । सुरेष बोनकर, प्रभारी क्षेत्रीय क्रीड़ाधिकारी द्वारा उपस्थित मुख्य अतिथि/विषिश्ट अतिथि खिलाड़ियों/दर्षको/पत्रकार बन्धुओं का आभार व्यक्त किया गया । जिला स्तरीय बालक भारोत्तोलन प्रतियोगिता में 50 खिलाड़ियों द्वारा प्रतिभाग किया गया स्कूल का नाम संन इंटरनेषनल स्कूल,षेरबुड कालेज,जी0आई0सी0,ए0टी0एस0स्कूल, झॉसी के विघालय के खिलाड़ियों द्वारा प्रतिभाग किया गया । तथा जिला स्तरीय बालक बॉक्सिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 73 बालकों द्वारा प्रतिभाग किया गया । जिला स्तरीय बॉक्सिंग प्रतियोगिता का षुभआरम्भ जिला बॉक्सिंग संघ के सचिव अब्दुल हमीद द्वारा किया गया । प्रतियोगिता में प्रतिभाग करनें वाले स्कूल का नाम इस प्रकार है। खालसा इं0कालेज,संन इंटरनेषनल पब्लिक स्कूल, बाला जी पब्लिक स्कूल, सेन्ट उमर पब्लिकष् स्कूल, षेयरबुड कालेज, ए0टी0एस स्कूल, एस0पी0आई0इं0 कालेज ,हाफिज सिदद्की इं0काले0,सेन्ट मार्क पब्लिक स्कूल, हॉस राज पब्लिक स्कूल के खिलाड़ियों द्वारा प्रतिभाग किया गया । उक्त प्रतियोगिता के निर्णायक सुनील कुमार,उप क्रीड़ाधिकारी,, निसार खॉन,, अब्दुल हफिज,उज्जवल, राधवेन्द्र नामदेव, कु0 श्रद्वा अहिरवार, हिमांषु षर्मा, सीलू साहनी,, के0जितेन्द्र, आजम खॉन, उक्त प्रतियोगिता के अवसर पर जिला बॉक्सिंग संघ के दिनॉक 25 जनवरी, 2025 को बॉक्सिंग खेल के सभी फाईनल मुकाबले खेले जायेगें।

पीएम केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 3 झाँसी में परीक्षा पे चर्चा के अंतर्गत प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता सम्पन्न

■ झांसी

परीक्षा पे चर्चा-2025 कार्यक्रम के अंर्तगत पराक्रम दिवस के अवसर पर 23 जनवरी 2025 को पीएम केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 3 झाँसी में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन सम्पन्न हुआ । यह प्रतियोगिता ज़िला स्तर की थी जिसमें ज़िले के 12 स्कूलों के 100 बच्चों नें प्रतिभाग किया । पीएम केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 3 झाँसी में आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में विभिन्न स्कूलों के 100 बच्चों ने प्रतिभागिता की । विद्यालय के प्राचार्य सुभाष चंद्र श्रीवास्तव ने बताया कि गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम के अंतर्गत ज़िला स्तर की प्रतियोगिता आयोजित करने की ज़िम्मेदारी विद्यालय को दी गयी ।

सभी विजेताओं को स्कूल के प्राचार्य सुभाष चंद्र श्रीवास्तव एवं वरिष्ठ शिक्षक अजय सिंह ने प्रमाण पत्र वितरित कर सम्मानित किया । अंत में सभी का आभार ज्ञापित करते हुए विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षक अजय सिंह ने सभी बच्चों की रचनात्मकता व प्रयासों की सराहना की । मंच संचालन कला शिक्षक मुईन अख्तर द्वारा किया गया । इस मौके पर अजय कुमार सिंह, मुईन अख्तर, श्रीमती नीलू गौतम, अजय कुमार साहू, अक्षय झा, सुसुभि श्रीवास्तव, राजेश वर्मा आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे ।

26 जनवरी को आकाशवाणी झाँसी से किया जाएगा पवन तूफान की कविताओं का प्रसारण

झाँसी। नगर के वरिष्ठ साहित्यकार लोक भूषण पन्नालाल असर, राजकुमार अंजुम एवं डॉ पवन गुप्ता तूफान की कविताओं का प्रसारण गणतंत्र दिवस के अवसर पर 26 जनवरी को शाम 5.30 बजे से आकाशवाणी के झांसी केंद्र से किया जाएगा ।यह जानकारी पवन गुप्ता तूफान ने दी,उन्होंने बताया कि सभी रचनाकार देशभक्ति पर केंद्रित अपनी कविताओं का वाचन करेंगे।

राम मन्दिर अयोध्या के पुर्नस्थापना दिवस पर प्राचीन लक्ष्मी मन्दिर में सुंदर काण्ड, छप्पन भोग एवं भजन संध्या सम्पन्न

झांसी। भारत विकास परिषद, रानी झाँसी द्वारा लक्ष्मी गेट बाहर, प्राचीन लक्ष्मी मंदिर प्रांगण में सुंदर काण्ड राममयी भजन संध्या का आयोजन किया गया । भजन संध्या का शुभारंभ श्रीमती राजकुमारी अग्रवाल एवं शाखा के संस्थापक अध्यक्ष राजेश जैन नि. सभासद द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया । इस दौरान सुप्रसिद्ध गायक रवि महाराज ग्रुप, चन्द्रकान्त गोयल ने राममयी भजनों के अमृत रस से सभी को सरावोर कर दिया इस भक्ति रस से शायद ही कभी इतनी प्रसन्नता मिली होगी क्योंकि यह उत्सव कब महोत्सव में बदल गया पता ही नहीं चला ।उपस्थित भक्त गण भक्ति रस में डूबकर झूमें जा रहे थे। सारा देश राम मय हैं और कालांतर में राम मय रहना भी चाहिये इसी प्रसन्नता के क्रम में सभी राम भक्त जैसे दीपावली के बाद अन्नकूट मनाते है उसी प्रकार भारत विकास परिषद,रानी झाँसी द्वारा प्रसाद वितरण छप्पन भोग के साथ जिसमें सभी भक्तगणों का सहयोग रहा । इसके पूर्व आलोक सोनल गर्ग (महामाया) ने सभी भक्तों को चंदन का तिलक, एवं दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया ।इस अवसर पर संस्थापक अध्यक्ष राजेश जैन, अध्यक्ष राषि जैन, प्रभास खण्डेलवाल, वी.के. जैन, चन्द्रकान्त गोयल, अनिल चौधरी, जितेन्द्र साहू, अनिल अग्रवाल, आषुतोश मोदी, विनय अग्रवाल सैनेटरी, दीपक वार्ष्णेय, अमिताभ नगरिया, भानु अग्रवाल, शैलेन्द्र अग्रवाल, विनय जैन, आयुष बंसल, उमेश अग्रवाल पिन्टु, अमित अग्रवाल, संजीव जैन, आनन्द पुरन्दरे, राजकुमारी अग्रवाल, कमलेष जैन, सोनल गर्ग, शिल्पी वार्ष्णेय, बीना चौधरी, अर्चना मोदी, पूनम साहू, अरुणा अग्रवाल, सुमन गोयल, रष्मि नगरिया, भावना अग्रवाल, मधु अग्रवाल, संगीता अग्रवाल, रागिनी जैन, डॉली अग्रवाल, दीपा अग्रवाल, रंजना जैन, अल्पना पुरन्दरे आदि उपस्थित रहे ।सभी भक्तगणों का आभार सचिव चैताली खण्डेलवाल ने व्यक्त किया।

संगीतगुरु पं परशुराम पाठक को उत्तरप्रदेश गौरव सम्मान दिलाये जाने की मांग उठाई

■ गुरसरांय (झांसी)

नगर के पत्रकारों ने कुंवर राम कुमार सिंह एवं डॉ सुकदेव व्यास के साथ क्षेत्रीय विधायक जवाहरलाल राजपूत को ज्ञापन फाइल सौंप कर मैहर घराने के संगीतगुरु प्रसिद्ध सितार वादक पं परशुराम पाठक को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उत्तर प्रदेश गौरव सम्मान से सम्मानित करने की मांग की।उन्होंने उपलब्धियों की फाइल सौंपते हुए मांग की है कि श्री पाठक ने निशुल्क संगीत की शिक्षा देकर हजारों शिष्यों को भारतीय संगीत सिखाया।उनके सम्मान से पूरे बुंदेलखंड का गौरव बढ़ेगा।इस मौके पर अरुण चतुर्वेदी, अखिलेश तिवारी सुट्टा,सरजू शरण पाठक,अखिलेश तिवारी छिरोरा, शिशुपाल सिंह सरस, जयप्रकाश बरसै या,फूल सिंह परिहार,राजेश अग्रवाल, सत्यप्रकाश द्विवेदी, सुनील चौहान,कौशल किशोर,राम गोपाल शर्मा,अंकित सेंगर,संदीप श्रीवास्तव ,आशुतोष गोस्वामी, सोम मिश्रा,सार्थक नायक,सुनील जैन ,आयुष त्रिपाठी, हरिश्चंद्र नायक,शौकीन खान,नितिन मोदी आदि उपस्थित रहे।

बरूआसागर सब्जी मण्डी में केमिकल से अदरक धोने की शिकायत पर जांच करने पहुंची औषधि प्रशासन की टीम

बरुआसागर (झांसी)। देश में अदरक अरबी हल्दी के लिए नामचीन सब्जी मंडी में शुमार नगर की थोक सब्जी मंडी में अदरक को केमिकल से धोने की शिकायत के बाद खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग की टीम ने मौके पर पहुंचकर जांच की और नमूने भी भरे। इस दौरान नवीन सब्जी मंडी में स्थित दो व्यापारियों की फर्म पर नमूने लिए गए। खाद्य सुरक्षा अधिकारी ने बताया कि दो व्यापारियों के प्रतिष्ठानों गिद्ध वाहिनी जिंजर कंपनी, श्रीराम जिंजर कंपनी से अदरक के कुल दो नमूने एकत्रित किए गए, जिन्हें परीक्षण के लिए प्रयोगशाला भेजा जा रहा है। अचानक थोक सब्जी मंडी में पहुंचे सहायक आयुक्त, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन, चितरंजन कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि खाद्य पदार्थों की शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए यह कार्रवाई की गई। शिकायत मिलने के बाद विभागीय टीम ने तत्काल निरीक्षण किया, ताकि किसी भी प्रकार की मिलावट या हानिकारक रसायनों के प्रयोग की पुष्टि की जा सके। हालांकि, मौके पर निरीक्षण के दौरान किसी भी स्थान पर केमिकल उपयोग का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिला। इस निरीक्षण के दौरान खाद्य सुरक्षा अधिकारियों ने मंडी के व्यापारियों को चेतावनी दी कि यदि किसी भी प्रकार की मिलावट या रसायनिक उपचार की पुष्टि होती है, तो सख्त कार्रवाई की जाएगी।

खाद्य सुरक्षा को लेकर प्रशासन सतर्क

खाद्य सुरक्षा विभाग लगातार खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता की निगरानी कर रहा है और आम जनता को सुरक्षित व शुद्ध खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। अदरक को हानिकारक केमिकल से धुलाई किए जाने की शिकायत पर सब्जी आढ़तियों के फर्म पर अदरक के नमूने लिए गए हैं, जिन्हें प्रयोगशाला भेजा जा रहा है, जांच रिपोर्ट आने पर विधिक कार्यवाही अमल में लाई जाएगी। (चितरंजन कुमार, जिला खाद्य सुरक्षा अधिकारी)

गरौठा चैंपियन व बरमाईन की टीम ने जीते मैच

गरौठा (झांसी)। ग्यापुरी प्रीमियर लीग में आज चौथे दिन दो मैच खेले गए जिसमें पहला मुकाबला गरौठा चैंपियन और कचीर के मध्य खेला गया। जिसका उद्घाटन मुख्य अतिथि अखिल प्रताप सिंह व प्रिंस परिहार द्वारा फीता काटकर किया गया। गरौठा ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 107 रन बनाए इसके जवाब में कचीर 60 रन ही बना सकी जिसमें शिवा रावत 56 रन बनाकर मैन ऑफ द मैच बने। वहीं दूसरा मुकाबला बरमाईन और सैदरी के मध्य खेला गया। जिसमें बरमाईन ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 145 रन बनाए जिसके जवाब में सैदरी 112 रन ही बना सकी। 77 रन एवं तीन विकेट लेने वाले जोगेंद्र को मैन ऑफ द मैच चुना गया । अंपायरिंग - प्यारे खान और हमराज खान ने की वहीकमेन्ट्रीआनंद वाल्मीकि और कृष्णा ठाकुर द्वारा व स्कोरिंग-आदर्श गौतम और शिवा ठाकुर ने की प्रीमियर लीग में कमेटी के सदस्य दुर्गेश , मनीष ठाकुर , विक्की ठाकुर शिवम ठाकुर बरमाईन, बीरेंद्र महाराज , देवेंद्र गौतम , विक्की महाराज, राहुल चंदेल, छोटू मिश्रा गंगाराम आदि के द्वारा खूब मेहनत की जा रही है।

279 लाभार्थियों को 4.51 करोड़ रुपये मुख्यमंत्री राहत कोष से दिए गए-जवाहरलाल राजपूत

■ गुरसरांय (झांसी)

उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में भाजपा सरकार तगाम योजनाओं के जरिये जरुरतमंदों को मदद कर रही है. गंभीर बीमारी से ग्रसित लोगों का पूरा इलाज का खर्च भी सरकार उठा रही है. इसी के तहत गरौठा विधानसभा क्षेत्र और आस पास के सैकड़ों लोग जो गंभीर बीमारी से परेशान थे और आर्थिक कमजोरी के चलते उपचार नहीं करवा पा रहे थे ऐसे सैकड़ों मरीजों को करीब 4.50 करोड़ रुपये की सहायता प्रदान की गई है। उक्त उद्गार क्षेत्रीय विधायक जवाहरलाल राजपूत ने पत्रकार वार्ता के दौरान व्यक्त किये। उन्होंने बताया कि प्रदेश में गरौठा विधानसभा क्षेत्र के बीमार व्यक्तियों को सबसे ज्यादा आर्थिक सहायता धनराशि मुख्यमंत्री राहत कोष से जारी की गई. ।क्षेत्र के सैकड़ो लोग जो गंभीर बीमारी से परेशान थे और उनके बीमार होने व आर्थिक परेशानी की जानकारी हमें मिली तो उनके इलाज के लिए शासन को अनुरोध पत्र भेजकर उनकी मदद कराई गई है।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गरीब असहाय लोगों को हमेशा आर्थिक मदद देने के लिए आगे रहते हैं। अस्वस्थ होने पर सरकार उनके उपचार के लिए भी वचनवद्ध है.। हम उन बीमार व्यक्तियों की मदद करना चाहते हैं जो पैसों के अभाव के चलते उपचार कराने में असमर्थ हैं।हमने ऐसे सैकड़ों लोगों के उपचार की शिफारिश मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी से की है।जिसके बाद मुख्यमंत्री राहत कोष से करीब 4.50 करोड़ रुपये उनके उपचार के खर्च के लिए जारी किए गए हैं. इनमें देश के कई बड़े अस्पताल भी शामिल हैं जहां उपचार करवाने पर सरकार ने आर्थिक धनराशि जारी की। बीमारियों में कैंसर, अंग ट्रांसप्लांट, लीवर, ब्रेन ट्यूमर, आंख ऑपरेशन, रागेत किसी भी बीमारी के लिए सरकार निर्धारित खर्च बजट के हिसाब से धनराशि जारी करती है। बीमारी में उपचार के लिए आप में से कोई व्यक्ति आवेदन कर सकते हैं। मरीज के आवश्यक दस्तावेज मूल स्टीमेट, आधार कार्ड की कॉपी, आय प्रमाण पत्र आदि।उन्होंने बताया कि आवेदन पत्र हमें या हमारे कार्यालय गरौठा विधानसभा क्षेत्र में दिया जा सकता है। मैं हमेशा से ही जरूरतमंदो की सहायता के लिए संकल्पित हूं. किसी भी गंभीर बीमारी यदि किसी भी व्यक्ति को है, तो हिम्मत हारने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मैं बीमारी के इलाज के लिए मुख्यमंत्री राहत कोष से धनराशि दिलाने में पूरी मदद करूँगा.।इस दौरान ललित पटेल,जितेंद्र कुशवाहा,मुन्नी दाऊ,कमलेश दुवे,सुमित त्रिपाठी, अखिलेश तिवारी छिरौरा आदि उपस्थित रहे।

सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों की सहभागिता बैठक आयोजित

मोंठ (झांसी)। शुक्रवार को शासन के निर्देशानुसार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सभागार में आज डॉ. एम.पी. राजपूत की अध्यक्षता में सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों की सहभागिता बैठक एवं कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में राज्य स्तरीय पर्यवेक्षक योग्यता खर्गवाल एवं डॉ. पवन पालीवाल ने विशेष रूप से भाग लिया।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य क्षय रोग (टीबी) के प्रति जागरूकता बढ़ाना और इस रोग के प्रभावी उपचार की जानकारी प्रदान करना था। बैठक की शुरुआत में डॉ. पवन पालीवाल ने क्षय रोग के लक्षण, उपचार और बचाव के उपायों पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह एक पूर्णतः ठीक होने वाली बीमारी है, बशर्ते समय पर उचित इलाज और परामर्श लिया जाए।योग्यता खर्गवाल ने कार्यक्रम में विधिक जानकारी साझा की और सरकारी योजनाओं के लाभों को समझाया। इस अवसर पर स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी जिया जफर, सहायक शोध अधिकारी मनोज कुमार, स्वास्थ्य पर्यवेक्षक पी.डी. पाठक, बीसीपीएम आशुतोष निरंजन, राजेश सिंह, और जगन्नाथ चंद्रशेखर सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।कार्यक्रम का संचालन प्रबंधक धीरज गुप्ता ने किया, जबकि सभी अतिथियों और प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त भारत लाल ने किया। बैठक में सामुदायिक स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की गई।यह बैठक सामुदायिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में जागरूकता और सहयोग बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुई।

भेल झाँसी के नवनियुक्त इकाई प्रमुख महाप्रबंधक रिजवान फैसल सिद्दीकी ने पदभार ग्रहण किया

झांसी। सार्वजनिक क्षेत्र की प्रतिष्ठित कम्पनी बीएचईएल झांसी के नवनियुक्त इकाई प्रमुख महाप्रबंधक रिजवान फैसल सिद्दीकी द्वारा विधिवत कार्यभार ग्रहण किया गया । रिजवान फैसल सिद्दीकी ने भोपाल से स्थानांतरित होकर 10 जनवरी 2025 को झांसी में महाप्रबंधक परिचालन के रूप में ज्वाइन किया था तथा 24 जनवरी 2025 को पूर्व इकाई प्रमुख विनय निगम के सेवानिवृति उपरांत बीएचईएल झांसी के इकाई प्रमुख के रूप में पद भार ग्रहण किया । एम ए सी टी (वर्तमान में मेंनिट) कॉलेज भोपाल से मैकेनिकल इंजी. में स्नातक एवं परास्नातक की डिग्री धारक रिजवान जी ने वर्ष 1989 में बीएचईएल झांसी में अभियंता प्रशिक्षु के रूप में अपनी सेवाएं प्रारम्भ कीं तत्पश्चात भोपाल इकाई में स्थानांतरित हो गये । भेल के सभागार मे आयोजित कार्यक्रम मे सेवानिवृत हो रहे विनय निगम को सम्मानित कर भाव पूर्ण विदाई दी गई और रिजवान जी का स्वागत एवं अभिनंदन किया गया । इस अवसर पर भेल के समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों, यूनियन प्रतिनिधियों ने नवागन्तुक इकाई प्रमुख को शुभकामनाएं देकर उनके नेतृत्व में कम्पनी के विकास में सतत सहयोग का आश्वासन दिया ।

रोशनी से जगमगाता मेला महाकुंभ

वैश्विक महाकुंभः यूपी का डंका सात समंदर पार, धरती के कोने कोने से लोग महाकुंभ देखने को आ रहे हैं

अमेरिका, रूस, यूक्रेन, बांग्लादेश समेत 73 देशों के राजनयिक संगम में लगाएंगे डुबकी

महाकुम्भ बना संपूर्ण विश्व का आध्यात्मिक केंद्र, विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों का गंगा किनारे होने जा रहा समागम

महाकुम्भनगर संपूर्ण विश्व का आध्यात्मिक केंद्र बन गया है। 73 देशों के राजनयिक पहली बार यहां संगम में स्नान करने जा रहे हैं। परस्पर धुर विरोधी माने जाने वाले देशों रूस और यूक्रेन के राजदूत भी इस ऐतिहासिक आयोजन में शामिल होंगे। यह वैश्विक आयोजन गंगा किनारे भिन्न-भिन्न संस्कृतियों और विचारधाराओं के बीच एक अनोखे सामंजस्य का संदेश देगा। यहां अमेरिका और बांग्लादेश के भी राजनयिक अमृतकाल के गवाह बनेंगे। इस महाआयोजन के जरिए सात समंदर पार तक यूपी का डंका बज रहा है। इसीलिए धरती के कोने-कोने से लोग महाकुम्भ देखने के लिए बेकरार हैं। विदेशों से यहां आ रहे श्रद्धालुओं के अनुसार धरती के सबसे बड़े सांस्कृतिक समागम के मुख्य आयोजक मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इस समय दुनिया के सभी शक्तिशाली देशों की दृष्टि में प्रमुख नायक बन गए हैं।

इन देशों से पहुंच रहे मेहमान

महाकुम्भनगर के डीएम (मेलाधिकारी) विजय किरण आनंद ने पुष्टि की कि 1 फरवरी को 73 देशों से राजनयिक महाकुम्भ का महात्म्य देखने आ रहे हैं। विदेश मंत्रालय ने मुख्य सचिव को इसके लिए पत्र भी लिखा है। पत्र में कहा है कि दुनियाभर के राजनयिक महाकुम्भनगर में बड़े हनुमान जी और अक्षयवट के दर्शन करना चाहते हैं। जिन देशों के राजनयिक आ रहे हैं उनमें जापान, अमेरिका, रूस, यूक्रेन बांग्लादेश, जर्मनी के साथ ही आर्मेनिया स्लोवेनिया, हंगरी, बेलारूस, सेशेल्स, मंगोलिया, कजाकिस्तान ऑस्ट्रिया, पेरु, ग्वाटेमाला, मैक्सिको, अल्जीरिया, दक्षिण अफ्रीका, अल सल्वाडोर, चेक रिपब्लिक, बुल्गारिया, जॉर्डन, जमैका, इरिट्रिया, फिनलैंड, ट्यूनीशिया, फ्रांस, एस्टोनिया, ब्राजील, सूरीनाम, जिंबाब्वे, मलेशिया, माल्टा, भूटान, लेसोथो, स्लोवाक, न्यूजीलैंड, कंबोडिया, किरगिज, चिली, साइप्रस, क्यूबा, नेपाल, रोमानिया, वेनेजुएला, अंगोला, गुयाना, फिजी, कोलंबिया, सीरिया, गिनी, म्यांमार, सोमालिया, इटली, बोत्सवाना, परागुआ, आइसलैंड, लातविया, नीदरलैंड, कैमरून, कनाडा, स्विट्जरलैंड, स्वीडन, थाईलैंड, पोलैंड, बोलिविया शामिल हैं।

स्नान के साथ करेंगे आध्यात्मिक भ्रमणः ये सभी विदेशी राजनयिक नाव के जरिए संगम नोज पहुंचेंगे और पवित्र स्नान करेंगे। यहां से वे अक्षय वट और बड़े हनुमान मंदिर का दर्शन करने जाएंगे। इसके बाद डिजिटल महाकुम्भ एक्सपीरियंस सेंटर के माध्यम से आधुनिक तकनीक के जरिए महाकुम्भ की गहराई को समझेंगे। प्रदर्शनियों और सांस्कृतिक भ्रमण भी करेंगे, जिसमें यूपी स्टेट पवेलियन, अखाड़े, यमुना कॉम्प्लेक्स, अशोक स्तंभ और अन्य स्थलों का अवलोकन करेंगे।

महाकुम्भ बना संपूर्ण विश्व का केंद्रः 73 देशों के प्रतिनिधि भारत की संस्कृति, आध्यात्मिकता और धर्मनिरपेक्षता का अनुभव करेंगे। यह आयोजन विश्व को भारत की समृद्ध परंपराओं और योग, ध्यान तथा आध्यात्मिकता का परिचय देगा। विदेश मंत्रालय और गृह मंत्रालय के अधिकारी इस आयोजन को सुचारू बनाने के लिए पूरी तरह से तत्पर हैं। विदेशी राजनयिकों के लिए बमरौली हवाई अड्डे पर विशेष वीआईपी लाउंज में नाश्ते का इंतजाम किया गया है। इसके साथ ही टूर गाइड की व्यवस्था भी की गई है। गृह मंत्रालय के 140 कर्मचारियों के लिए नावों का विशेष इंतजाम किया गया है।

योगी के प्रयास से दुनिया भागी चली आ रही है यूपी

इस महाकुम्भ के जरिए भारत ने विश्व को एकता, शांति और सहयोग का संदेश दिया है। दिव्य-भव्य महाकुम्भ को मुख्यमंत्री योगी ने जिस प्रकार से एक विजन के तहत साकार किया है, उसे लेकर वैश्विक स्तर पर चर्चा होने लगी है। देश ही नहीं विदेश के श्रद्धालुओं का भी यही कहना है कि महाकुम्भ के जरिए सीएम योगी ने उत्तर प्रदेश का डंका सात समंदर पार तक बजाया है। विश्व के हर कोने से लोग इस आयोजन को देखने के लिए प्रयागराज की ओर रुख कर रहे हैं।

महाकुम्भ-2025 में उठाइए सबसे बड़े ड्रोन शो का आनंद

आकाश में समुद्र मंथन का जीवंत चित्रण

संगम तट पर संस्कृति, अध्यात्म और तकनीकी का अद्भुत नजारा

महाकुम्भ में सबसे बड़े ड्रोन शो का शुभारंभ हो चुका है। श्रद्धालु आकाश में समुद्र मंथन का जीवंत चित्रण देख रहे हैं। पर्यटन विभाग की ओर से 2,500 ड्रोन का विशाल शो दिखाया जा रहा है। मेला क्षेत्र में श्रद्धालुओं को ड्रोन के माध्यम से भारतीय गौरवशाली संस्कृति, अध्यात्म और तकनीकी का अनूठा समन्वय देखने को मिल रहा है। आकाश नीली रोशनी से जगमगा उठता है और रंग-बिरंगे धार्मिक प्रतीकों की अद्भुत छटा देखने को मिलती है।

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि सेक्टर-7 में ड्रोन शो का शुभारंभ शंख ध्वनि के साथ होता है। महाकुम्भ की गाथा को अनोखे रूप में प्रस्तुत होती है। समुद्र मंथन के महाकाव्य को आकाश के विशाल कैनवास पर जीवंत होते देखा जा सकता है। महाकुम्भ मेले को एक वैश्विक तीर्थ स्थल का रूप दिया गया है। ड्रोन शो के माध्यम से प्रौद्योगिकी और परंपरा का यह अद्भुत संगम संभव हो रहा है। पर्यटन विभाग इस शो में सैकड़ों ड्रोन की मदद से आसमान में जीवंत आकृतियों का प्रदर्शन कर रहा है।

ड्रोन शो में देवताओं को अमृत कलश पीते हुए देखिए, यह दृश्य आपको विस्मित कर देगा। समुद्र मंथन की दिव्य झांकी आपको मंत्रमुग्ध कर देगी। यूपी दिवस के उपलक्ष्य में सांस्कृतिक झांकी ने शोभा बढ़ाई।

ड्रोन के जरिए आसमान में महाकुम्भ और उत्तर प्रदेश का लोगो उकेरा जा रहा है, यह सभी को आकर्षित करेगा। शंख बजाते हुए साधु और संगम में स्नान करते हुए संन्यासी की छवि भी बेहद आकर्षक रहीं। ड्रोन शो का मुख्य आकर्षण विधानसभा भवन पर लहराता तिरंगा है। यह दृश्य देशभक्ति और गर्व से भरा हुआ था। इस ड्रोन शो के माध्यम से महाकुम्भ के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व को भी बड़ी खूबसूरती से प्रदर्शित किया।

निर्गुण राम के उपासक हैं रामनामी, मंदिर और मूर्ति पूजा नहीं करते

मंदिर न मूर्ति, रामनाम ही है अवतार

सनातन संस्कृति के महापर्व महाकुम्भ में सम्मिलित होने तरह-तरह के साधु, संन्यासी, जाति, पंथ, संप्रदाय के लोग देश के कोने-कोने से आते हैं। इस क्रम में महाकुम्भ में सम्मिलित होने छत्तीसगढ़ के रहने वाले रामनामी संप्रदाय के अनुयायी पवित्र संगम में आस्था की डुबकी लगाने आये हैं। अपने पूरे शरीर में राम नाम गुदवाये हुए, सफेद वस्त्र और सिर पर मोरपंख का मुकुट धारण किये हुए रामनामी संप्रदाय के अनुयायी संगम की रेती पर राम भजन करते हुए महाकुम्भ में पवित्र स्नान को बेताब हैं।

- छत्तीसगढ़ के रामनामी संप्रदाय के अनुयायी करने आये हैं महाकुम्भ में अमृत स्नान
- राम के ननिहाल से जुड़े हैं रामनामी संप्रदाय के लोग पूरे शरीर पर गुदवाते हैं राम नाम
- छत्तीसगढ़ के जांजगीर चंपा से शुरू हुआ था रामनामी संप्रदाय

राम नाम ही अवतार, राम नाम ही भवसागर की पतवार

रामनामी संप्रदाय के कौशल रामनामी का कहना है कि महाकुम्भ में पवित्र स्नान करने उनके पंथ के लोग जरूर आते हैं। मौनी अमावस्या की तिथि पर राम नाम का जाप करते हुए हम सब संगम में अमृत स्नान करेंगे। छत्तीसगढ़ के सारंगढ़ से आये कौशल रामनामी का कहना है पिछली पांच पीढ़ी से उनके पुरखे महाकुम्भ में सम्मिलित होने आते रहे हैं। आने वाले समय में हमारे बच्चे भी परंपरा जारी रखेंगे। उन्होंने बताया कि सारंगढ़, भिलाई, बलौदाबाजार और जांजगीर से 200 रामनामी हमारे साथ आये हैं। अभी और भी लोग मौनी अमावस्या से पहले प्रयागराज आ रहे हैं। हम लोग परंपरा के मुताबिक मौनी अमावस्या के दिन राम नाम का जाप करते हुए त्रिवेणी संगम में स्नान करेंगे। राम भजन करते हुए महाकुम्भ से अपने क्षेत्रों में लौट जाएंगे। उन्होंने बताया कि वो रामनाम को ही अवतार और भवसागर की पतवार मानते हैं। वो मंदिर नहीं जाते और मूर्ति पूजा नहीं करते। केवल राम नाम का जाप ही उनका भजन है और रामनाम लिखी देह ही मंदिर।

रामनामी संप्रदाय के लोग पूरे शरीर पर गुदवाते हैं राम नाम

पौराणिक मान्यता और परंपरा के अनुसार महाकुम्भ में पवित्र संगम में स्नान करने सनातन आस्था से जुड़े सभी जाति, पंथ और संप्रदाय के लोग जरूर आते हैं। इसी में से एक हैं छत्तीसगढ़ के जांजगीर, भिलाई, दुर्ग, बालोदाबजार, सारंगढ़ से आये हुए रामनामी संप्रदाय के लोग। 19वीं शताब्दी में जब सनातन संस्कृति के तथाकथित उच्च वर्ग के लोगों ने छत्तीसगढ़ में कुछ जनजाति के लोगों को मंदिर में प्रवेश करने और मूर्ति पूजा से वंचित किया तो जनजाति के लोगों ने अपने पूरे शरीर पर ही राम नाम अंकित कर अपनी देह को राम का मंदिर बना लिया। रामनामी संप्रदाय की शुरूआत जांजगीर चंपा के परशुराम से मानी जाती है। इस पंथ के अनुयायी अपने पूरे शरीर पर रामनाम का टैटू या गोदना गोदवाते हैं। राम नाम लिखा हुआ सफेद वस्त्र और सिर पर मोरपंख से बना मुकुट धारण करते हैं। राम नाम का जाप और मानस की चौपाईयों का भजन करते हैं। रामनामी संप्रदाय के लोग मंदिर और मूर्ति पूजा नहीं करते वो निर्गुण राम के उपासक हैं। वर्तमान में रामनामी संप्रदाय के 10 लाख से अधिक अनुयायी मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ के जिलों में रहते हैं।

स्व-तंत्र विकास का संकल्प दिवस हो

स्व-तंत्र विकास का अर्थ है व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर भारतीय स्वत्व के आधार पर सार्विक आत्मनिर्भरता की प्राप्ति। यह केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता नहीं, बल्कि मानसिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक और तकनीकी स्वतंत्रता का भी पर्याय है। आज भारत डिजिटल युग में प्रवेश कर चुका है, परंतु क्या यह डिजिटल तंत्र हमारा है? क्या हमारी जनता को भारतीय 'सर्च इंजन', 'सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म' मिला है? हमारा डेटा अमेरिकी और यूरोपीय डेटा सेंटर्स में है! क्या हम उनके सबसे बड़े 'डिजिटल कालोनी' नहीं बन गए? हमारी शिक्षा प्रणाली आज भी औपनिवेशिक ढांचे में बंधी हुई प्रतीत होती है।

शाहीन सबा

गणतंत्र दिवस का हर वर्ष आगमन न केवल एक उत्सव है, बल्कि यह उस आत्म-चेतना का क्षण है जब हम अपने स्वतंत्र अस्तित्व, अधिकारों और कर्तव्यों का मूल्यांकन करते हैं। 26 जनवरी, 1950 को 'हम भारत के लोग' ने 'संविधान को अंगीकृत' कर यह उद्घोष किया कि यह राष्ट्र अब न केवल स्वाधीन है, बल्कि अपने संचालन के लिए लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक न्याय को आधार बनाकर आगे बढ़ेगा। यह दिन हमारी लोकतांत्रिक यात्रा का प्रतीक है, परंतु, क्या यह पर्याप्त है? क्या केवल गणतंत्र की घोषणा भर से हम आत्मनिर्भर और स्वतंत्र हो गए हैं? या फिर यह दिवस हमें अपनी चुनौतियों को पहचानने और अपने स्व-तंत्र विकास के लिए संकल्प लेने का अवसर प्रदान करता है?

वैशाली या लिच्छवी गणराज्य के रूप में भारत ने संपूर्ण विश्व को पहला गणतंत्र दिया था। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद हमने लोकतंत्र को अपनाया, लेकिन क्या हमने स्व-तंत्रता, अर्थात भारतीय तंत्र और आत्मनिर्भरता के आदर्शों को पर्याप्त प्राथमिकता दी? महात्मा गांधी ने जब स्वराज की परिकल्पना की थी, तो वह केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं थी। उनका स्वराज आर्थिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता पर आधारित था। क्या हम उस स्वराज की दिशा में बढ़ रहे हैं या फिर केवल बाहरी उपलब्धियों के पीछे भाग रहे हैं।

भारत की संस्कृति और सभ्यता ने सदैव स्व को केंद्र में रखा है। कठोपनिषद का आत्मानं विद्धि का दर्शन केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक भी है। यदि कोई राष्ट्र अपनी आंतरिक शक्तियों को पहचानने और उन्हें विकसित करने में असमर्थ है, तो उसकी स्वाधीनता भी एक भ्रम मात्र बनकर रह जाती है।

स्व-तंत्र विकास का अर्थ है व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर भारतीय स्वत्त्व के आधार पर सार्विक आत्मनिर्भरता की प्राप्ति। यह केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता नहीं, बल्कि मानसिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक और तकनीकी स्वतंत्रता का भी पर्याय है। आज भारत डिजिटल युग में प्रवेश कर चुका है, परंतु क्या यह डिजिटल तंत्र हमारा है? क्या हमारी जनता को भारतीय 'सर्च इंजन', 'सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म' मिला है? हमारा डेटा अमेरिकी और यूरोपीय डेटा सेंटर्स में है! क्या हम उनके सबसे बड़े 'डिजिटल कालोनी' नहीं बन गए? हमारी शिक्षा प्रणाली आज भी औपनिवेशिक ढांचे में बंधी हुई प्रतीत होती है। अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति और इसका 'इकोसिस्टम' इतना मजबूत तंत्र विकसित कर चुका है कि आयुर्वेद से संपूर्ण आरोग्य की बात करते ही न्यायालय में ये लोग चुनौती देते हैं। दैनिक व्यवहार की वस्तुओं के बाजार में पतंजलि जैसे स्वदेशी उपक्रम की हिस्सेदारी बढ़ते ही उसको कानूनी रूप से निशाना बनाने का षड्यंत्र शुरू हो जाता है। अमृतकाल में आरोग्य की भारतीय चिकित्सा पद्धति को वैकल्पिक से मुख्य धारा में कानूनी रूप से अपनाया जाना चाहिए ताकि ये चिकित्सा प्रणालियां भी अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति की तरह काम कर सकें। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक ने जब गोमूत्र के औषधीय गुणों पर बात की तो उन पर निशाना साधते हुए कांग्रेस ने उन्हें अयोग्य करार दिया। भाई, विज्ञान की समझ प्रो कामकोटि को अधिक है या कांग्रेसी नेता को?

सांस्कृतिक दृष्टि से देखें तो, वैश्वीकरण ने हमें दुनिया से जोड़ा है, परंतु इसने हमारी सांस्कृतिक जड़ों को कमजोर करने की भी कोशिश की है। क्या आज का भारतीय युवा अपने लोकगीत, लोककला और भारतीय मूल्यों को उतनी ही गहराई से जानता है, जितना कि वह पश्चिमी संस्कृति को अपनाता है? स्व-तंत्र विकास का अर्थ केवल भौतिक समृद्धि नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण भी है। कोरोना काल में पुरी दुनिया ने भारत के नवाचार और आरोग्य के क्षेत्र में विश्वसनीय पुरूषार्थ को तो देखा ही, 'हैंड शेक' की जगह 'नमस्ते' के महत्व को भी पहचाना। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव के पश्चात हमारे सांस्कृतिक पुनर्जागरण का सूर्योदय हुआ। आज के युग में सौम्य शक्ति का सर्वाधिक महत्त्व है। भारतीय संस्कृति ही भारत की एकता, स्वतंत्रता और समता के मूल में है। उसकी सौम्य शक्ति को स्व-तंत्र के विकास के द्वारा विस्तार देना होगा। भारत की सांस्कृतिक धरोहर हमारी पहचान है। इसे पुनर्जीवित करना और अगली पीढ़ी तक पहुँचाना हमारा दायित्व है। योग, आयुर्वेद, और भारतीय शास्त्रीय संगीत जैसे खजाने केवल एक व्यवसाय नहीं, बल्कि जीवनशैली बननी चाहिए।

भारत की शिक्षा प्रणाली को भारतीय मूल्यों और आवश्यकताओं के अनुरूप पुनर्गठित करने की आवश्यकता है। शिक्षा जो रोजगार दे से बढ़कर शिक्षा जो सृजन करे का मंत्र अपनाना होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इस दिशा में कुछ कदम उठाए हैं, परंतु इसे जमीनी स्तर तक ले जाने की चुनौती अभी भी बनी हुई है।

हमारी अर्थव्यवस्था का प्रारूप भी पश्चिमी है या यूं कहें मिश्रित है। सकल घरेलू उत्पाद की गणना भी भारतीय समाज के अर्थव्यवहार के अनुरूप नहीं प्रतीत होती। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में आत्मनिर्भरता का अर्थ है स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को पुनर्जीवित करना। वोकल फॉर लोकल का नारा केवल एक अभियान नहीं, बल्कि एक आंदोलन बनना चाहिए। हमें अपने ग्रामीण उद्योगों, हस्तशिल्प और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना होगा। छोटे और मझोले उद्यमों को प्रोत्साहित किए बिना आत्मनिर्भरता का सपना अधूरा है। आज जब दुनिया कृत्रिम बुद्धिमत्ता और इंटरनेट ऑफ थिंग्स की दिशा में आगे बढ़ रही है, तो भारत को तकनीकी क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के लिए बड़े कदम उठाने होंगे। मेड इन इंडिया को डिज़ाइन्ड इन इंडिया में बदलना होगा। वर्तमान केंद्र सरकार ने 'इंडियन पीनल कोड' की जगह भारतीय न्याय संहिता लागू कर न्याय-व्यवस्था में स्व-तंत्र की ओर एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है।

गणतंत्र दिवस केवल सरकारों की उपलब्धियों को गिनने का दिन नहीं है। एक ऐसा पर्व जो हमें यह याद दिलाता है कि लोकतंत्र की असली शक्ति नागरिकों के हाथ में है। यदि हर नागरिक स्व-तंत्रता के आदर्शों को अपने जीवन में उतारे, तो कोई भी बाधा भारत को विश्वगुरु बनने से नहीं रोक सकती। आज हमें आत्मचिंतन करना होगा कि हम कब तक परानुकरण करते रहेंगे? कब तक पश्चिम की किसी 'इंडेक्स' में अपना 'रैंक' देखकर प्रसन्न या खिन्न होकर आपसी विवाद की माया में पड़े रहेंगे। हम अपना मानक स्वयं क्यों न तय करें? क्या हमारा गणतंत्र इतना सशक्त, आत्मनिर्भर और न्यायसंगत नहीं है? यह अवसर हमें अपने प्रयासों को पुनर्जीवित और भारतीय तंत्र को पुनर्प्रतिष्ठित करने का आह्वान करता है।

भारतीय समाचार पत्र दिवस 29 जनवरी 2025 - विलुप्त होती प्रिंट मीडिया को 1 फरवरी 2025 को पेश होने वाले बजट में पैकेज का बेसब्री से इंतजार

साहित्यकार, लेखक, विचारक राष्ट्र की बौद्धिक निधि होती है - विचारों को पाठकों तक पहुंचाने में प्रिंट मीडिया का बहुमूल्य योगदान

वित्तमंत्री ने प्रिंट मीडिया को भारतीय समाचार पत्र दिवस का तोहफा 1 फरवरी 2025 को बजट में किसी पैकेज के रूप में देना समय की मांग- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - भारत आदि अनादि काल से हस्तलिखित व प्रिंट साहित्य का गढ़ रहा है। हम अगर भारत के इतिहास की गहराई में जाएं तो हमें रामायण, भागवत गीता सहित अनेक भाषाओं के अनेकों साहित्य ग्रंथ के रूप में अनमोल मोती मिलेंगे जो हमारी धरोहर है,हमारी सभ्यता,संस्कृति, संस्कार के प्रतीक हैं हम भारतीयों ने पीढ़ियों से इस साहित्य को संजोकर रखे हैं और आगे भी हम अगली पीढ़ियों के लिए संजोकर रखेंगे।आज अगर हम वर्तमान डिजिटल युग में हैं तो हमें इसका आधारभूत सहारा मिला है, अपने साहित्य को सुरक्षा से संरक्षित करने का, क्योंकि हस्तलिखित पौराणिक साहित्य की भी एक सीमा होती है और हो सकता था आगे के सैकड़ों हजारों सालों में यह विलुप्तता के कागार पर होता,परंतु डिजिटल क्रांति ने इसे अब सुरक्षित रखना संभव बना दिया है। अब हमें यकीन है हो चला है कि हमारा आदि अनादि काल का भारतीय साहित्य पूर्णत सुरक्षित रहेगा। परंतु इस डिजिटल युग में प्रिंट मीडिया की विलुप्तता के रूप में हमें भारी कीमत चुकानी पड़ रही है, क्योंकि भारत की धरोहर कहे जाने वाली प्रिंट मीडिया अब विलुप्तता की कगार पर हैक्योंकि करीब हर समाचार संस्थान आज वित्तीय क्राइसिस से जूझ रहा है परिणामतःअनेक मासिकपाशिक व साप्ताहिक समाचार पत्र बंद हो गए हैं, कई दैनिक समाचार पत्र भी बंद हो चुके हैं तो कई बंद होने की कगार पर है, इस विषय पर आर्टिकल लिखने को मैंने इसलिए चुना क्योंकि 29 जनवरी 2025 को भारतीय समाचार पत्र दिवस है,तो वहीं 1 फरवरी 2025 को भारत की वित्त मंत्री बजट पेश करेंगी इसलिए इसे एक-दो दिन पहले प्रकाशित करना जरूरी है,ताकि इस आर्टिकल के माध्यम से मैं निवेदन माननीय वित्तमंत्री तक पहुंचेकि प्रिंट मीडिया के लिए कुछ आर्थिक पैकेज की घोषणा के लिए फंड का एलोकेशन किया जाए। इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारीके सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, बजट 2025 से प्रिंट मीडिया को संजीवनी रूपी पैकेज का बेसब्री से इंतजार! साथियों बात अगर हम 29 जनवरी 2025 को भारतीय समाचार पत्र दिवस की करें तो, हर साल हम देश के पहले मुद्रित समाचार पत्र के जन्म की याद में भारतीय समाचार पत्र दिवस मनाते हैं ।यह अंग्रेजी साप्ताहिक हिकीज बंगाल गजट था, जिसे 29 जनवरी, 1780 को एक आयरिश व्यक्ति ने शुरू किया था। इस दिन का उद्देश्य समाचार पत्रों को बढ़ावा देना और लोगों को हर दिन समाचार पत्र उठाकर पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना है। हिकी का बंगाल गजट ब्रिटिश शासन के दौरान समाचार और राय लाने के लिए जाना जाता था। इसने तत्कालीन गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स के प्रशासन की कड़ी आलोचना की और यह भारत में अपनी पत्रकारिता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई के लिए महत्वपूर्ण था। यह साप्ताहिक प्रकाशित समाचार पत्र आम आदमी को प्रशासन और सत्ता में बैठे लोगों के करीब लाने की दिशा में एक बड़ा कदम था। साथियों बात अगर आम आनें वाले बजट 2025 की करें तो इसमें प्रिंट मीडिया के लिए कुछ शासकीय सहयोग की व्यवस्था का बजट करना अपेशित है, क्योंकि कोरोना काल से ही पत्रकारों, संस्थान से जुड़े कर्मचारियों को वित्तीय समस्या की भारी परेशानी का सामना करना पड़ा है और शासन प्रशासन द्वारा मामूली राहत की घोषणा पत्रकारों के लिए की गई थी परंतु कोई इंसेंटिव या पैकेज नहीं दिया इसपर भी शासन से निवेदन है कि प्रिंट मीडिया कर्मचारियों के लिए बजट में एलोकेशन कर कोई राहत पैकेज और प्रिंट मीडिया संस्थानों को भी वित्तीय सहायता राहतकोष का निर्माण करना होगा,क्योंकि हम अगर प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्र का बारीकी से विश्लेषण करेंगे तो हजारों मीडिया संस्थान जिसमें मासिक, साप्ताहिक और दैनिक समाचार पत्र शामिल है, बंद पड़े हैं! क्योंकि आज के डिजिटल युग में वह घाटे में चल रहे थे, विज्ञापन आना बंद हो गए हैं, आय का दूसरा कोई साधन, स्त्रोत नहीं है ऊपर से कर्मचारियों पत्रकारों, ऑपरेटरों का वेतन और ऑफिस किराया, बिजली बिल, नगर पालिका, महानगर पालिका कर सहित अनेकों करो का बोझ।लॉकडाउन से ही प्रिंट मीडिया की हालत और भी खराब हुई है जिसका शासन प्रशासन को गंभीरता से रेखांकित कर प्रिंट मीडिया को विलुप्तता से बचाने, किसी वित्तीय, राहत कोष बनाने का रणनीतिक रोडमैप बनाने की जरूरत है, जिसकी जरूरत अभी आने वाले 1 फरवरी 2025 को बजट में करने की अपेक्षा है जिसका निवेदन मैं इस आलेख के माध्यम से कर रहा हूं। साथियों बात अगर हम प्रिंट मीडिया की करें तो इसको हमें मिलकर विलुप्तता से हमें बचाना है, क्योंकि आज हम सब जानते हैं कि प्रिंट मीडिया की वित्तीय हालत नाजुक बनी हुई है। मेरा मानना है कि कुछ ही संस्थान को छोड़कर अधिकतम प्रिंट मीडिया संस्थान वित्तीय समस्याओं से जूझ रहे हैं क्योंकि वर्तमान डिजिटल युग में हालांकि पीडीएफ फाइल के सहारे प्रिंट मीडिया का विस्तार, प्रसार बड़ा है परंतु उससे वित्तीय समस्याओं का समाधान नहीं निकलता है बल्कि बढ़ जाता है क्योंकि, आजकल करीब करीब सभी लोगों के पास डिजिटल मोबाइल है और पीडीएफ देख पढ़ लेते हैं यदि कोई खरीदते भी हैं तो 2 से 5 रुपए उसकी कीमत है सिर्फ! उसके ऊपर भी सोशल मीडिया के कारण विज्ञापनों में भारी कमी आई है और सरकारें,राजनीतिज्ञ राजनीतिक पार्टी सामान्य,और निजी विज्ञापनों में भी काफी गिरावट आई है जिसके कारण प्रिंट मीडिया की आर्थिक समस्या बढ़ गई है जिसका शासन प्रशासन को स्वतः संज्ञान लेने की जरूरत है और प्रिंट मीडिया को विलुप्तता से बचाने की महत्वपूर्ण जवाबदारी भी है क्योंकि यह भी लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है। साथियों बात अगर हम आदि अनादि काल से इस साहित्य को लिखने वालों की करें और वर्तमान पीढ़ी में नए साहित्यकारों की करें तो साहित्यकार, लेखक, विचारक राष्ट्र की बौद्धिक निधि होते हैं उनका सम्मान करना हमारा कर्तव्य है और उनका सम्मान हमारे हृदय में है भी, परंतु अगर हम गहराई में जाएं तो साहित्यकारों लेखकों विचारकों के विचार, साहित्य, पाठकों तक पहुंचाने में सबसे बड़ी भूमिका आज प्रिंट मीडिया की है क्योंकि प्रिंट मीडिया बौद्धिक निधि के विचारों को प्रकाशित कर उन विचारों को जीवंतता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है जो सराहनीय कार्य है। साथियों बात अगर हम माननीय उपराष्ट्रपति द्वारा एक कार्यक्रम में संबोधन की करें तो राष्ट्रपति सचिवालय की पीआईबी के अनुसार उन्होंने भी, इस अवसर पर लेखकों और विचारकों को राष्ट्र की बौद्धिक पूंजी बताया जो इसे अपने सृजनात्मक विचारों और साहित्य से समृद्ध करते हैं। शब्द और भाषा को मानव इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण आविष्कार बताते हुए उन्होंने कहा कि साहित्य समाज की विचार-परंपरा का जीवंत वाहक है। उन्होंने कहा, कोई समाज जितना सुसंस्कृत होगा, उसकी भाषा उतनी ही परिष्कृत होगी। समाज जितना जागृत होगा, उसका साहित्य उतना ही व्यापक होगा। साथियों बात अगर हम समाचार पत्रों के भारत में प्रारंभ होने के ऐतिहासिक करें तो, भारत में समाचार पत्रों का इतिहास भारत का पहला समाचार पत्र बंगाल गजट था जिसे जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने शुरू किया था। इस समाचार पत्र को 1780 में कलकत्ता जनरल एडवर टाइजर के नाम से भी जाना जाता था। साम्राज्य की आलोचना करने के कारण 1782 में ब्रिटिश प्रशासन द्वारा जब्त किए जाने से पहले यह पत्र भारत में सिर्फ दो साल तक चला।द बंगाल जर्नल, कलकत्ता क्रॉनिकल, मद्रास कूरियर और बॉम्बे हेराल्ड सहित कई अन्य समाचार पत्र बाद में शुरू किए गए, लेकिन ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा लगाए गए सेंसरशिप उपायों से उन्हें रोक दिया गया। ब्रिटिश शासन के दौरान विधायी विनियमन 1835 का प्रेस अधिनियम था, जिसे मेटकाफ अधिनियम के रूप में जाना जाता है। यह 1857 केविद्रोह तक चला जिसके बाद एक विदेशी प्रशासन ने लाइसेंसिंग अधिनियम पेश किया,भारत में प्रेस की स्वतंत्रता परसबसे महत्वपूर्ण विनियमों में से एक वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट था, जिसे 1878 में लाया गया था। इसे तत्कालीन वायसराय लॉर्ड लिटन ने पेश किया था, जिसने सरकार को वर्नाक्यूलर प्रेस में रिपोर्ट और संपादकीय को सेंसर करने का अधिकार दिया था। भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, संविधान सभा द्वारा तैयार किए गए मौलिक अधिकारों के आलोक में प्रेस कानूनों की जांच करने के लिए एक प्रेस जांच समिति का गठन किया गया था। उसी के बाद, देश में समाचार पत्रों के प्रचलन की जांच करने के लिए 1954 में न्यायमूर्ति राजाध्यक्ष के अधीन एक और प्रेस आयोग का गठन किया गया। समिति की एक प्रमुख सिफारिश अखिल भारतीय प्रेस परिषद की स्थापना थी। इसकी औपचारिक स्थापना 4 जुलाई 1966 को हुई थी।यह एक स्वायत्त,वैधानिक,अर्ध-न्यायिक निकाय था, जिसकी स्थापना सर्वोच्च न्यायालय के तत्कालीन न्यायाधीश न्यायमूर्ति जेआर मुधोलकर की अध्यक्षता में की गई थी।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि भारतीय समाचार पत्र दिवस 28 जनवरी 2025-विलुप्त होती प्रिंट मीडिया को 1 फरवरी 2025 को पेश होने वाले बजट में पैकेज का बेसब्री से इंतजार।साहित्यकार, लेखक, विचारक राष्ट्र की बौद्धिक निधि होती है - विचारों को पाठकों तक पहुंचाने में प्रिंट मीडिया का बहुमूल्य योगदान।वित्तमंत्री ने प्रिंट मीडिया को भारतीय समाचार पत्र दिवस का तोहफा 1 फरवरी 2025 को बजट में किसी पैकेज के रूप में देना समय की मांग हैं।

-संकलनकर्ता लेखक - कर विशेषज्ञ स्तंभकार साहित्यकार अंतरराष्ट्रीय लेखक चिंतक कवि संगीत माध्यमा सीए(एटीसी) एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

गीता को जानें - 9

गीता, मन और चेतना का विज्ञान है

पितामह भीष्म तथा द्रोणाचार्य दोनों ही महापराक्रमी थे। भीष्म कुरुवंश के पितामह थे और उनका स्नेह अपने सभी पौत्रों के प्रति था। उन्होंने दुर्योधन से कहा था कि जैसे तुम मेरे स्नेह के पात्र हो वैसे ही पांडव भी हैं। मैं तुम्हारे लिए युद्ध अवश्य करूँगा पर पाण्डवों के पूछने पर उनके हित का परामर्श भी दूँगा (महा. उद्योग. 156/16, 17)। इसलिए दुर्योधन के मन में यह विचार था कि हो सकता है सेनापति भीष्म पांडवों के स्नेहवश पूरी ताकत से युद्ध न कर सकें। पितामह के मन से पांडवों का स्नेह तो नहीं निकाला जा

ओमप्रकाश श्रीवास्तव

गीता, मानव के व्यक्तित्व के बाह्य और आंतरिक पक्षों के रहस्यों को समग्रता से उजागर करती है इसलिए यह पंचमहाभूतों से बने भौतिक शरीर तक सीमित नहीं है। यह मन के विज्ञान (साइकोलॉजी) तक भी सीमित नहीं है वरन् इससे भी गहराई तक जाकर बुद्धि, अहंकार और इन सबके आधार ईश्वर के अंश आत्मा तक का ज्ञान प्रदान करती है। इसका प्रारंभ मन से होता है इसलिए गीता के प्रथम अध्याय में जब संजय, दुर्योधन के द्वारा कही गई बातें बताता है तो उसके पीछे के मनोविज्ञान को समझना आवश्यक है। महाभारत के अध्ययन से पता चलता है कि दुर्योधन का उद्देश्य राज्य प्राप्त करके स्वयं के लिए सुख, भोग, मान, प्रतिष्ठा आदि प्राप्त करना था। उसकी सोच केवल अपने स्वार्थ और सांसारिक लाभों तक ही सीमित थी इसलिए उसके मनोभावों की व्याख्या करने के लिए मनोविज्ञान पर्याप्त है।

दूसरी ओर अर्जुन का अपने स्वजनों को देखकर मोह और शोक से ग्रस्त होना तथा युद्ध न करने के निश्चय को समझाने का कार्य केवल मनोविज्ञान के द्वारा नहीं हो सकता क्योंकि अर्जुन केवल स्वार्थ से प्रेरित नहीं है, वह केवल मन तक सीमित नहीं है। उसकी बुद्धि शुद्ध है और चेतना का तल संसार से ऊपर है। वह धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य पर भी विचार करता है और पाता है कि उसके कर्तव्यों के साथ इनका विरोधाभाश हो रहा है। वह धर्म की सामान्य समझ के आधार पर इन समस्याओं का हल करना चाहता है इसलिए कुलधर्म, पितर, श्राद्ध-तर्पण, वर्ण संकर आदि पर विचार करता है परंतु इससे उसे जीवन के इस गहरे द्वंद्व का समाधान नहीं मिलता। इसलिए वह विषाद (डिप्रेशन) में चला जाता है और इस समस्या का स्थाई समाधान करने के लिए भगवान् उसे गीता सुनाते हैं। इसलिए प्रारंभ में दुर्योधन के कथनों के पीछे का मनोविज्ञान समझना होगा। इसके बाद अर्जुन के विषाद को समझने के लिए उसके मनोविज्ञान और चेतना की अवस्था दोनों को समझना होगा तभी गीता को समझने का आधार बनेगा। इस लेखमाला में हम क्रम से इन पर विचार करते हुए चेतना की गहराइयों में उतरने का प्रयास करेंगे।

पांचाल नरेश पृषत और महर्षि भरद्वाज मित्र थे। पृषत का पुत्र राजकुमार द्रुपद तथा भरद्वाज का पुत्र द्रोण एक ही उम्र के थे। दोनों भरद्वाज के आश्रम में खेलते थे। बाद में दोनों ने महर्षि अग्निवेश के गुरुकुल में शिक्षा पाई थी। इस प्रकार दोनों घनिष्ठ मित्र हो गये थे। इसी मित्रता में द्रुपद ने एक बार द्रोण से कहा कि जब मैं राजा बनूँगा तो मेरे राज्य के सब वैभव और सुख तुम्हारे लिए भी होंगे। कालान्तर में द्रोण ने परशुराम से सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्रों का रहस्य सीखा और धनुर्विद्या के महान आचार्य बने परंतु ब्राह्मणों की तरह याचकवृत्ति से जीवन यापन करते रहे। धन-वैभव की उन्हें कोई चाह नहीं थी परंतु एक घटना ने उन्हें उद्वेलित कर दिया। हुआ यह कि उनका पुत्र अश्वत्थामा अपने साथियों को दूध पीते देख दूध के लिए मचल गया। गरीब द्रोण के पास गाय नहीं थी। उन्होंने देखा कि पुत्र के साथी बच्चे उसका मजाक बनाते हुए उसे आटे का घोल पिला रहे हैं और वह नादान पुत्र उसे दूध समझकर प्रसन्नता से नाच रहा है। यह देख द्रोण से रहा नहीं गया और पुरानी मित्रता को याद कर, सहायता लेने की आशा से पांचाल जाकर द्रुपद से मित्रवत मिले। द्रुपद को यह बात सहन नहीं हुई कि एक गरीब ब्राह्मण उसे अपना मित्र कहे। द्रुपद ने द्रोण का अपमान किया और कहा कि मित्रता तो समान स्तर वालों के बीच होती है। द्रोण इस अपमान से जल उठे और बदला लेने के लिए समय की प्रतीक्षा करने लगे (महा. आदि पर्व.130)।

इसके बाद द्रोण, भीष्म से मिले और उनकी प्रतिभा को पहचान कर भीष्म ने उन्हें धन-धान्य दिया और अपने पौत्रों अर्थात् कौरव और पांडव दोनों की शिक्षा के लिए नियुक्त कर दिया। शिक्षा पूरी होने पर द्रोण ने अपने शिष्यों से गुरु दक्षिणा में द्रुपद का राज्य छीनकर लाने को कहा। द्रोण के शिष्यों व द्रुपद के बीच भीषण संग्राम हुआ। पांडवों ने द्रुपद को बंदी बनाकर द्रोण के समक्ष पेश कर दिया। द्रोण ने पांचाल देश का आधा राज्य स्वयं रखा और आधा द्रुपद को वापस कर दिया और कहा कि अब हम समान स्तर के हैं और मित्र हो सकते हैं। अब अपमान में जलने की बारी द्रुपद की थी (महा.वन.165)। उन्होंने द्रोण का वध करने के लिए शक्तिशाली संतान की कामना से महर्षि याज से यज्ञ कराया और यज्ञ कुण्ड से महा तेजस्वी कुमार और अत्यंत रमणीय कुमारी प्रकट हुई। कुमार का नाम धृष्टद्युम्न और कुमारी का नाम कृष्णा रखा गया जो द्रुपद की पुत्री होने के कारण द्रोपदी कहलाई। द्रोणाचार्य जानते थे कि उनकी मृत्यु के लिए ही धृष्टद्युम्न का जन्म हुआ है परंतु जब द्रुपद अपने पुत्र को लेकर उनके पास गये तो उन्होंने गुरु के कर्तव्य का स्मरण करके उदारता पूर्वक धृष्टद्युम्न को शिष्य के रूप में स्वीकार किया व उसे अस्त्र-शस्त्रों में पारंगत कर दिया (महा. वन. 166)।

वही धृष्टद्युम्न पांडव सेना के सेनापति के रूप में द्रोण के समक्ष खड़ा था। इसी बैर को स्मरण कराने के लिए दुर्योधन, धृष्टद्युम्न को 'द्रुपद का पुत्र और आपका शिष्य' कहता है (1.3)। भाव यह है कि द्रुपद के बैर को याद करिये, आपको मारने के लिए ही धृष्टद्युम्न का जन्म हुआ है और अपनी गलती पर भी विचार कीजिए कि आपने ही उसे अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा दी है। पांडवों का सेनापति धृष्टद्युम्न अवश्य था परंतु उनकी सेना की व्यूह रचना अर्जुन ने की थी (महा. भीष्म.19/7) परंतु दुर्योधन ने जान बूझकर धृष्टद्युम्न का नाम लिया ताकि द्रोण को उत्तेजित किया जा सके।

पितामह भीष्म तथा द्रोणाचार्य दोनों ही महापराक्रमी थे। भीष्म कुरुवंश के पितामह थे और उनका स्नेह अपने सभी पौत्रों के प्रति था। उन्होंने दुर्योधन से कहा था कि जैसे तुम मेरे स्नेह के पात्र हो वैसे ही पांडव भी हैं। मैं तुम्हारे लिए युद्ध अवश्य करूँगा पर पाण्डवों के पूछने पर उनके हित का परामर्श भी दूँगा (महा. उद्योग. 156/16, 17)। इसलिए दुर्योधन के मन में यह विचार था कि हो सकता है सेनापति भीष्म पांडवों के स्नेहवश पूरी ताकत से युद्ध न कर सकें। पितामह के मन से पांडवों का स्नेह तो नहीं निकाला जा सकता था पर द्रोण को पुराना बैर याद दिलाकर उत्तेजित तो किया ही जा सकता था और दुर्योधन ने यही किया। इसके अलावा सेनापति भीष्म के स्थान पर द्रोणाचार्य के पास जाकर दुर्योधन ने भीष्म का भी अपमान किया ताकि वे भी उत्तेजित हो जाएँ। यहाँ दुर्योधन को राजा कहा गया है (1.2) जबकि राजा तो उसका पिता धृतराष्ट्र था। इससे स्पष्ट हो गया है कि अब धृतराष्ट्र नाम मात्र का राजा बचा था। व्यवहारिक रूप से सत्ता के सारे सूत्र दुर्योधन के हाथों में जा चुके थे।

(क्रमशः)

(लेखक मप्र के गृह सचिव एवं धर्म -दर्शन के साधक हैं)

संक्षिप्त समाचार

रेखा आर्य ने खिलाड़ियों का स्वागत कर शुभकामनाएं दी

देहरादून। उत्तराखंड की खेल मंत्री रेखा आर्य ने 38वें राष्ट्रीय खेलों में भाग लेने यहां पहुंचे विभिन्न राज्यों के खिलाड़ियों का शनिवार को व्यक्तिगत रूप से स्वागत किया और अपनी शुभकामनाएं दीं। श्रीमती रेखा आर्य ने ट्रायथलॉन प्रतियोगिता के पहले जत्थे का स्वागत करते हुए कहा, मैं 38वें राष्ट्रीय खेलों में भाग लेने के लिए उत्तराखंड की धरती पर आए विभिन्न राज्यों की टीमों को हार्दिक बधाई देती हूं। देवभूमि के लोगों की ओर से मैं सभी खिलाड़ियों को उनके प्रदर्शन के लिए शुभकामनाएं देती हूं। मैंने स्थानीय अधिकारियों को अन्य राज्यों से हल्द्वानी पहुंचने वाली टीमों के स्वागत, परिवहन, आवास और भोजन की आवश्यक व्यवस्था करने के निर्देश पहले ही दे दिए हैं। आने वाले दिनों में शेष प्रतियोगिताओं के लिए हजारों और खिलाड़ी उत्तराखंड पहुंचेंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 28 जनवरी को देहरादून के राजीव गांधी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में 38वें राष्ट्रीय खेलों का भव्य उद्घाटन करेंगे। राष्ट्रीय खेलों की स्पर्धाएं हल्द्वानी, देहरादून, ऋषिकेश, हरिद्वार और रुद्रपुर समेत कई शहरों में आयोजित की जाएंगी।

विधायक ट्राफी सरताज खुली जिला रैंकिंग बैडमिंटन स्पर्धा 31 जनवरी से

इंदौर। सरताज अकादमी द्वारा इंदौर जिला बैडमिंटन संगठन के तहत आयोजित विधायक ट्राफी 66वीं सरताज खुली इंदौर जिला मिनी और सब जूनियर रैंकिंग बैडमिंटन स्पर्धा 31 जनवरी से 3 फरवरी तक नेहरु स्टेडियम बैडमिंटन हाल में होगी, स्पर्धा आयोजन समिति अध्यक्ष दीपेंद्र सिंह सोलंकी और इंदौर जिला बैडमिंटन संगठन सचिव आर पी सिंह नैयर ने बताया कि स्पर्धा में 11, 13 और 15 वर्ष आयु के बालक और बालिका वर्ग के मुकाबले होंगे, 13 और 15 वर्ष आयु वर्ग में युगल मुकाबले भी खेले जाएंगे। क्षेत्र क्रमांक 3 के विधायक गोलू शुक्ला स्पर्धा आयोजन समिति के संरक्षक और सरताज अकादमी प्रबंध निदेशक धर्मेश यशलहा स्पर्धा सचिव होंगे, स्पर्धा के लिए प्रविष्टियां 29 जनवरी तक स्पर्धा सचिव धर्मेश यशलहा, विशाल चांदवानी,सुधांशु व्यास, शालिनी परदेशी आदि को दी जा सकती हैं, स्पर्धा के विजेता-उपविजेता खिलाड़ियों को ट्राफी और इनामी राशि दी जाएगी।

ऑस्ट्रेलियन ओपन : दो साल बाद महिला एकल में नया चैंपियन

मैडिसन कीज ने सबालेंका को हराकर जीता पहला खिताब

एजेंसी ■ मेलबर्न

ऑस्ट्रेलियन ओपन के खिताबी मुकाबले में 19वीं वरियता प्राप्त मैडिसन कीज ने विश्व नंबर एक आर्यना सबालेंका को हरकार खिताब अपने नाम कर लिया। रोमांचक मुकाबले में कीज ने सबालेंका को 6-3, 2-6, 7-5 से मात दी। मैडिसन ने इस जीत के साथ सबालेंका के लगातार तीसरे खिताब की ओर बढ़ते अभियान को समाप्त कर दिया। सबालेंका अगर यह खिताब जीत जाती तो ऑस्ट्रेलियन ओपन खिताब की हैट्रिक पूरी करने वाली छठी महिला बन जातीं। उनके पास 1997-1999 के बाद से मेलबर्न पार्क में तीन बार खिताब जीतने वाली मार्टिना हिंगिस के बाद पहली महिला खिलाड़ी बनने का मौका था। हालांकि, सेमीफाइनल में विश्व की नंबर दो इगा स्वियातेक को हराने वाली कीज ने सबालेंका को हराकर अपना पहला ग्रैंड स्लैम खिताब जीत लिया।

सेरेना विलियम्स के बाद ऑस्ट्रेलियन ओपन में पहली खिलाड़ी बनीं कीज

कीज ने अपना ग्रैंड स्लैम सपना पूरा किया क्योंकि वह रोलैंड गैरोस 2009 में स्वेतलाना कुजनेत्सोवा के बाद से दुनिया की शीर्ष दो रैंक वाली महिलाओं को किसी मेजर में हराने वाली पहली खिलाड़ी बन गई और 2005 में सेरेना विलियम्स के बाद ऑस्ट्रेलियन ओपन में पहली खिलाड़ी बनीं। कीज जो तीन सप्ताह में 30 वर्ष की हो जाएंगी, पहली बार प्रमुख खिताब जीतने वाली चौथी सबसे उम्रदराज खिलाड़ी हैं। उनसे पहले फ्लाविया पेनेटा हैं, जो 2015 में अमेरिकी ओपन का खिताब जीतने के समय 33 वर्ष की थीं। इसके बाद एन जोन्स हैं, जो 1969 में विंबलडन जीतने के समय 30 वर्ष की थीं। इसके बाद फ्रांसेस्का शियावोन हैं, जो 2010 में रोलैंड गैरोस जीतने के समय लगभग 30 वर्ष की थीं।

खिताब के साथ मैडिसन कीज

तीसरे सेट में दोनों खिलाड़ियों के बीच हुआ घमासान

इस मैच के अंतिम क्षणों में दोनों खिलाड़ियों ने बेहतरीन खेल दिखाया। इन दोनों में से कोई भी खिलाड़ी हार नहीं मनना चाह रहा था। एक समय पर दोनों 5-5 गेम की बराबरी पर आ गई थी। लेकिन इसके बाद मैडिसन कीज एक गेम जीतकर स्कोर 5-6 कर दिया। इसके बाद सबालेंका के पास वापसी कर गेम को ट्राई ब्रेकर में पहुंचाने का मौका था लेकिन वो ऐसा नहीं कर पाई और कीज ने तेज रफ्तार शॉट लगाकर चैंपियन प्वाइंट हासिल कर लिया और 7-5 के स्कोर से ऑस्ट्रेलियन ओपन 2025 की खिताब हासिल कर अपना पहला ग्रैंड स्लैम जीत लिया है।

उपविजेता आर्यना सबालेंका

सिनर-ज्वेरेव के बीच खिताबी मुकाबला आज

विश्व रैंकिंग में शीर्ष स्थान पर काबिज यानिक सिनर ऑस्ट्रेलियाई ओपन के फाइनल में रविवार को जब जर्मनी के अलेक्जेंडर ज्वेरेव के खिलाफ कोर्ट में उतरेंगे तो उनके सामने खिताब के बचाव करने की चुनौती होगी। पुरुष एकल में ऐसा बहुत कम बार हुआ है कि किसी खिलाड़ी ने करियर के अपने पहले ग्रैंड स्लैम खिताब का सफलता से बचाव किया है। पिछली बार राफेल नडाल ने 2005 और 2006 में फ्रेंच ओपन का खिताब जीतकर ऐसा कारनामा किया था।

सिनर के सामने कई चुनौतियां- सिनर के सामने कई तरह की चुनौतियां है जिसमें डोपिंग का मामला भी शामिल है। यह मामला अब भी विचाराधीन है। पिछले साल मार्च में उनके नमूने में दो बार एनाबॉलिक स्टेरॉयड की थोड़ी मात्रा की पुष्टि हुई थी। यह बात को हालांकि अमेरिकी ओपन शुरू होते समय सार्वजनिक की गई थी। उन्होंने तब अमेरिकी ओपन का खिताब जीता था। विश्व डोपिंग रोधी एजेंसी की अपील पर हालांकि इस मामले की अप्रैल में सुनवाई होनी है।

ज्वेरेव को पहले ग्रैंडस्लैम खिताब का इंतजार

विश्व रैंकिंग में दूसरे स्थान पर काबिज 27 साल के ज्वेरेव इससे पहले दो बार ग्रैंड स्लैम के फाइनल में पहुंचे है और उन्हें दोनों बार निराशा हाथ लगी है। वह सिनर को हराकर अपना पहला खिताब जीतने के लिए पूरा जोर लगायेंगे। वह डोमिनिक थिएम के खिलाफ अमेरिकी ओपन 2020 के फाइनल में दो सेट की बढ़त को भुनाने में नाकाम रहे थे। पिछले साल कार्लोस अल्काराज ने उन्हें फ्रेंच ओपन के फाइनल में हराया था।

टाटा स्टील शतरंज टूर्नामेंट : प्रज्ञानंद 4.5 अंकों के शीर्ष पर मौजूद

गुकेश ने अब्दुसात्तोरोव के साथ खेला ड्रा

एजेंसी ■ विज्क आन जी (नीदरलैंड)

विश्व चैंपियन डी गुकेश ने यहां टाटा स्टील शतरंज टूर्नामेंट के छठी बाजी में संयुक्त रूप से शीर्ष पर काबिज उज्बेकिस्तान के नोदिरबेक अब्दुसात्तोरोव के साथ ड्रॉ खेला, जबकि आर प्रज्ञानंद ने गत चैंपियन चीन के वेई यी के साथ अंक साझा किए। अब्दुसात्तोरोव और प्रज्ञानंद संभावित छह में से 4.5 अंकों के साथ संयुक्त रूप से शीर्ष पर काबिज है जबकि गुकेश चार अंकों के साथ उनके बाद है।

साल के पहले बड़े टूर्नामेंट में अभी सात बाजियों के मुकाबले बाकी हैं। पी हरिकृ ष्णा, सर्बिया के एलेक्सी सरना और स्लोवेनिया के व्लादिमीर फेडोसीव साढ़े तीन अंकों के साथ संयुक्त रूप से चौथे स्थान पर हैं। गुकेश ने अब्दुसात्तोरोव के खिलाफ चुनौतीपूर्ण मुकाबले में पकड़ ढीली पड़ने के बाद अच्छी वापसी की और 64 चालों के बाद इसे ड्रॉ करने पर सहमत हो गए। इस मुकाबले की शुरुआत इटालियन ओपनिंग (सफेद मोहरों से प्यादा और वजीर के चाल के जवाब में काले मोहरों से प्यादा और घोड़े (नाइट) की चाल) से हुई। शुरुआती चालों के बाद अब्दुसत्तोरोव ने मैच पर अपनी पकड़ मजबूत करनी शुरू की। आखिरी कु छ चालों गुकेश को अपना एक मोहरा गंवाने के लिए मजबूर होना पड़ा। उनके लिए स्थिति तब और जटिल हो गयी जब अब्दुसत्तोरोव ने तीन प्यादों के लिए अपने घोड़े की बलि दे दी। गुकेश इसके बाद काफी दबाव में आ गए। मुश्किल परिस्थिति होने के बावजूद गुकेश ने एक बार फिर अपनी शानदार रक्षात्मक खेल से मुकाबला ड्रॉ कराया। प्रज्ञानंद ने सफेद मोहरों से वेई यी के खिलाफ बढ़त बनाने की कोशिश की, लेकिन चीन के खिलाड़ी ने 58 चाल के बाद उन्हें मुकाबला ड्रॉ करने पर मजबूर कर दिया। पी हरिकृष्णा ने हॉलैंड के जॉर्डन वान फॉरेस्ट और अर्जुन एरिगैसी ने अमेरिका के फैबियानो कारूआना जोखिम लेने से बचते हुए बराबरी का मुकाबला खेला।

यूडब्ल्यूडब्ल्यू ने दी भारत को निलंबन की धमकी

नई दिल्ली। कु श्ती की शीर्ष वैश्विक संस्था यूनाइटेड वर्ल्ड रेसिलिंग (यूडब्ल्यूडब्ल्यू) ने भारत को निलंबित करने की धमकी दी है। संस्था के अध्यक्ष नेनाद लालोविच ने लिखा है कि भारतीय कुश्ती महासंघ के आंतरिक मामलों में राजनीतिक हस्तक्षेप बंद नहीं हुआ और उसकी स्वायत्तता बरकरार नहीं रही तो उस पर प्रतिबंध लगाया जा सकता है। खेल मंत्रालय ने कुश्ती महासंघ को दिसंबर, 2023 से निलंबित कर रखा है। विश्व चैंपियनशिप में टीम तो भेज दी गई, लेकिन अन्य टूर्नामेंटों में टीमें नहीं जा पा रही हैं। क्रोएशिया आमंत्रण टूर्नामेंट के लिए अब तक मंत्रालय की ओर से हरी झंडी नहीं मिली है।

रणजी ट्रॉफी : जम्मू-कश्मीर ने मुंबई को पांच विकेट से हराया

एजेंसी ■ मुंबई

पारस डोगरा की अगुवाई वाली जम्मू-कश्मीर की टीम ने रणजी ट्रॉफी 2024-25 के दूसरे चरण में शनिवार को बड़ा उलटफेर करते हुए पूर्व चैंपियन मुंबई को पांच विकेट से हरा दिया है।

शरद पवार अकादमी में खेल गये मुकाबले के तीसरे दिन मुंबई ने जम्मू-कश्मीर को 205 रनों का लक्ष्य दिया। जिसे उसने पांच विकेट के नुकसान पर 49 ओवर में हासिल कर लिया। इससे पहले मैच के दूसरे दिन को शार्दूल ठाकुर ने (119) की शतकीय और तनुष कोटियान ने (62) की अर्धशतकीय पारियों की बदौलत मुंबई ने दूसरी पारी में 290 का स्कोर बनाया। पहली पारी में बढ़त के आधार पर जम्मू एंड कश्मीर 205 रनों का लक्ष्य मिला। जम्मू-कश्मीर की ओर से आकिब नबी ने चार, युद्धवीर सिंह चरक ने तीन और उमर नजीर ने दो विकेट लिये। 205 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी जम्मू और कश्मीर की टीम के लिए सलामी बल्लेबाज यावर हसन और शुभम खजुरिया ने तेजी से रन बनाए। 11वें ओवर में मोहित अवस्थी ने यावर हसन (24) को आउट कर मुंबई को पहली सफलता दिलाई। शुभमन खजोरिया ने (45) विब्रांत शर्मा (38), अब्दुल समद (24) और कप्तान पारस डोगरा (25) रन बनाकर आउट हुये। आबिद मुश्ताक (32) और कन्हैया वधावन (19) रन बनाकर नाबाद रहे।

नोमान अली की घातक गेंदबाजी

पाकिस्तान ने वेस्टइंडीज को 163 पर समेटा

एजेंसी ■ मुल्तान

नोमान अली (छह विकेट) की घातक गेंदबाजी के दम पर पाकिस्तान ने दूसरे टेस्ट मैच के पहले दिन शनिवार को वेस्टइंडीज की पूरी टीम को 163 के स्कोर पर समेट दिया। यहां वेस्टइंडीज ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी वेस्टीइंडीज की शुरुआत बेहद खराब रही और उसके शुरुआती सात बल्लेबाज दहाई आंकड़े तक भी नहीं पहुंच सके। वेस्टइंडीज के चार बल्लेबाज शून्य पर आउट हुए। एक समय वेस्टइंडीज ने 38 के स्कोर पर अपने सात विकेट गवां दिये थे। हालांकि इस दौरान केवम हॉज एक छोर थामे खड़े रहे। उन्होंने गुडाकेश मोती के साथ पारी को संभालने का प्रयास किया। 17वें ओवर में अबरार अहमद ने केवम हॉज (21) को आउट किया। गुडाकेश मोती ने (55) रनों की पारी खेली। केमार रोच (25) रन बनाकर आउट हुए। जोमेल वारिकन (36) रन बनाकर नाबाद रहे। पाकिस्तानी गेंदबाजी आक्रमण के आगे वेस्टइंडीज की पूरी टीम पहली पारी में 41.1 ओवर में 163 रन पर सिमट गई। पाकिस्तान की ओर से नोमान अली ने 15.1 ओवर में 41 रन देकर छह विकेट लिये। साजिद खान को दो विकेट मिले। अबरार अहमद और काशिफ अली ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

आईसीसी ने मेन्स टी20 टीम ऑफ द ईयर 2024 का किया ऐलान

रोहित कप्तान, पंड्या, बुमराह और अर्शदीप टीम में शामिल

एजेंसी ■ नई दिल्ली

आईसीसी ने मेन्स टी20 टीम ऑफ द ईयर 2024 का ऐलान कर दिया जिसमें रोहित शर्मा समेत 4 भारतीय खिलाड़ियों को जगह मिली। रोहित शर्मा को इस टीम का कप्तान बनाया गया जिनकी कप्तानी में भारत ने टी20 वर्ल्ड कप 2024 का खिताब जीता था।

आईसीसी की इस टीम में जिन 4 भारतीय खिलाड़ियों को जगह दी गई उसमें भारतीय टी20 टीम के पूर्व कप्तान रोहित शर्मा, ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या के साथ तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह और अर्शदीप सिंह शामिल हैं। भारत ने वेस्टइंडीज में टी20 वर्ल्ड कप 2024 का खिताब जीता था और टीम इंडिया की इस जीत में हार्दिक पंड्या, बुमराह और अर्शदीप सिंह ने अहम भूमिका निभाई थी। इस टीम में बतौर ओपनर बल्लेबाज रोहित शर्मा और ऑस्ट्रेलिया के ट्रेविस हेड को चुना गया जबकि तीसरे नंबर पर बैटिंग के लिए टीम में इंग्लैंड के फिल साल्ट को शामिल किया गया। इस टीम में चौथे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए पाकिस्तान के बाबर आजम के चयनित किया गया जबकि विकेटकीपर-बल्लेबाज के रूप में इस टीम में वेस्टइंडीज के निकोलस पूरन जगह बनाने में सफल रहे। इस टीम में सिकंदर रजा को छठे नंबर पर बल्लेबाजी क्रम में रखा गया जबकि तेज गेंदबाजी ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या को 7वें नंबर पर फिनिशर के रूप में चुना गया। इस टीम में स्टार स्पिन ऑलराउंजर राशिद खान को भी जगह दी गई। श्रीलंका के ऑलराउंडर वानिंदु हसरंगा भी इस टीम में जगह बनाने में सफल रहे जबकि तेज गेंदबाज के रूप में इस टीम में जसप्रीत बुमराह और अर्शदीप सिंह को चुना गया।

आईसीसी मेन्स टी20 टीम ऑफ द ईयर 2024- रोहित शर्मा (कप्तान), ट्रेविस हेड, फिल साल्ट, बाबर आजम, निकोलस पूरन (विकेटकीपर), सिकंदर रजा, हार्दिक पांड्या, राशिद खान, वानिंदु हसरंगा, जसप्रीत बुमराह, अर्शदीप सिंह।

महिला अंडर-19 टी-20 विश्वकप

न्यूजीलैंड ने सुपर सिक्स मुकाबले में अमेरिका को 18 रनों से हराया

एजेंसी ■ बंगी

हन्ना फ्रांसिस (25), ऋषिका जायसवाल (17), एम्मा मैकलियोड, केट इर्विन (15-15) रनों की पारियों के बाद गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन की बदौलत न्यूजीलैंड ने महिला अंडर-19 टी-20 विश्वकप के सुपर सिक्स ग्रुप दो मुकाबले में अमेरिका को 18 रनों से हरा दिया है। न्यूजीलैंड के 97 रनों के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी अमेरिका शुरुआत खराब रही और उसने 41 के स्कोर पर अपने चार विकेट गवां दिये। इसके बाद रितु सिंह ने दिशा ढींगरा के साथ पारी को संभालने का प्रयास किया। दिशा ढींगरा ने अमेरिका के लिए सर्वाधिक (30) रनों की पारी खेली। अदितिबा चुडासमा (15) रन बनाकर आउट हुई। रितु सिंह (14) रन आउट हुई। न्यूजीलैंड के गेंदबाजों ने अमेरिका की पूरी टीम 17.1 ओवर में 79 रन पर सिमेट कर मुकाबला 18 रनों से जीत लिया। न्यूजीलैंड की ओर से ऋषिका जसवाल, केट इर्विन ने दो-दो विकेट लिए। हन्ना फ्रांसिस, अनिका तौव्हारे, सोफी कोर्ट और लुइसा कोटकैंप ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले आज यहां अमेरिका की महिला टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी न्यूजीलैंड का कोई भी बल्लेबाज अमेरिका की गेंदबाजी आक्रमण के आगे अधिक देर तक नहीं टिक सका। हन्ना फ्रांसिस (25), ऋषिका जसवाल (17), एम्मा मैकलियोड (15) और केट इर्विन (15) रनों की पारी खेली। न्यूजीलैंड की पूरी टीम 19.5 ओवर में 97 रन पर सिमट गई।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सैयद ज़की हैदर के लिए इरानीयन आर्ट प्रिंटर्स 1534 कासिमजान स्ट्रीट दरियागंज नई दिल्ली 11006 से मुद्रित कराकर, 2684 गली काले खां कूचा चलान दरियागंज नई दिल्ली 02 से प्रकाशित किया।
संपादक : सैयद ज़की हैदर- हैड ऑफिस :- एफ19/4 सेकेंड फ्लोर नफीश रोड जामिया नगर दिल्ली- 110025., सम्पर्क सूत्र :- 9911371802, 9810383593
जितेन्द्र कुमार बिस्वाल ब्यूरो चीफ उड़ीसा/ गोविंद कनोडिया/ पटना/ सैय्यद यूसुफ अली नक़वी-पॉलिटिकल एडिटर। ई-मेल:- dailyloktantra@gmail.com

किसी भी प्रकार के विवाद हेतु निपटारे के लिए केवल दिल्ली न्यायालय ही मान्य होगी।
नोट- किसी भी समाचार/आलेख पर दावा प्रति दावा/आपत्ति समाचार प्रकाशन के 15 दिनों के अन्तराल तक ही मान्य होगा। समाचार पत्र में प्रकाशित आलेख से संपादक/प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

क्षेत्रीय कार्यालय अनवार मंजिल नया टोला गंज नंबर 01 बेतिया/ बिहार/ पिन नंबर 84 5438/>> संवाददाता, सना खान/(डॉ. अमानुल हक) स्थानीय संपादक/बिहार)